قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

eParah

وَالمُحصَنتُ

पारा - 5

وَّالْمُحْصَنٰتُ	مِنَ النِّسَآءِ	اِلَّا	مَا	مَلَكَتْ	اَيْمَانُكُمْ ج	كِتٰبَ
और वो जो शादी शुदा हैं	औरतों में से	मगर	जिनके	मालिक हुए	दाऐं हाथ तुम्हारे	लिखा हुआ है

اللّٰهِ	عَلَيْكُمْ ج	وَاُحِلَّ	لَكُمْ	مَّا	وَرَآءَ	ذٰلِكُمْ	اَنْ	تَبْتَغُوْا
अल्लाह का	तुम पर	और हलाल किया गया है	तुम्हारे लिए	वो जो	इलावा है	उनके	कि	तुम तलाश करो

بِاَمْوَالِكُمْ	مُّحْصِنِيْنَ	غَيْرَ	مُسٰفِحِيْنَ ط	فَمَا	اسْتَمْتَعْتُمْ
साथ अपने मालों के	निकाह में लाने वाले हो	ना कि	बदकारी करने वाले	तो जो	फ़ायदा उठाया तुमने

بِهٖ	مِنْهُنَّ	فَاٰتُوْهُنَّ	اُجُوْرَهُنَّ	فَرِيْضَةً ط	وَلَا	جُنَاحَ
साथ उस (निकाह) के	उनसे	तो दे दो उन्हें	महर उनके	मुक़र्रर किए हुए	और नहीं	कोई गुनाह

عَلَيْكُمْ	فِيْمَا	تَرٰضَيْتُمْ	بِهٖ	مِنْ بَعْدِ	الْفَرِيْضَةِ ط	اِنَّ	اللّٰهَ
तुम पर	उसमें जो	तुम बाहम राज़ी हो जाओ	जिस पर	बाद	महर (मुक़र्रर) करने के	बेशक	अल्लाह

كَانَ	عَلِيْمًا	حَكِيْمًا (24)	وَمَنْ	لَّمْ	يَسْتَطِعْ	مِنْكُمْ	طَوْلًا
है	बहुत इल्म वाला	बहुत हिक्मत वाला	और जो कोई	ना	इस्तिताअत रखे	तुम में से	वुसअत/माल की

اَنْ	يَّنْكِحَ	الْمُحْصَنٰتِ	الْمُؤْمِنٰتِ	فَمِنْ مَّا	مَلَكَتْ	اَيْمَانُكُمْ
कि	वो निकाह करे	आज़ाद औरतों से	जो मोमिना हों	तो उनसे जिनके	मालिक हुए	दाऐं हाथ तुम्हारे

مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ	الْمُؤْمِنٰتِ ط	وَاللّٰهُ	اَعْلَمُ	بِاِيْمَانِكُمْ ط	بَعْضُكُمْ
तुम्हारी लौंडियों में से	जो मोमिना हों	और अल्लाह	ज़्यादा जानता है	तुम्हारे ईमान को	बाज़ तुम्हारे

مِّنْ بَعْضٍ ج	فَانْكِحُوْهُنَّ	بِاِذْنِ	اَهْلِهِنَّ	وَاٰتُوْهُنَّ	اُجُوْرَهُنَّ
बाज़ से हैं	तो निकाह कर लो उनसे	इजाज़त से	उनके मालिकों की	और दो उन्हें	महर उनके

بِالْمَعْرُوْفِ	مُحْصَنٰتٍ	غَيْرَ	مُسٰفِحٰتٍ	وَّلَا	مُتَّخِذٰتِ	اَخْدَانٍ ج
मारूफ़ तरीक़े से	निकाह में महफ़ूज़ होने वालियां	ना	बदकारी करने वालियां	और ना	बनाने वालियां	छुपे दोस्त

فَاِذَآ	اُحْصِنَّ	فَاِنْ	اَتَيْنَ	بِفَاحِشَةٍ	فَعَلَيْهِنَّ	نِصْفُ
तो जब	वो निकाह में लाई जाएं	फिर अगर	वो आएं	किसी बेहयाई को	तो उन पर है	आधी

مَا	عَلَى الْمُحْصَنٰتِ	مِنَ الْعَذَابِ ط	ذٰلِكَ	لِمَنْ	خَشِيَ
वो जो	पाक दामन औरतों पर है	सज़ा में से	ये	उसके लिए है जो	डरे

الْعَنَتَ	مِنْكُمْ ط	وَاَنْ	تَصْبِرُوْا	خَيْرٌ	لَّكُمْ ط	وَاللّٰهُ	غَفُوْرٌ
गुनाह से	तुम में से	और ये कि	तुम सब्र करो	बेहतर है	तुम्हारे लिए	और अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है

ع 4 3 1

رَّحِيْمٌ ﴿25﴾ ع	يُرِيْدُ	اللّٰهُ	لِيُبَيِّنَ	لَكُمْ	وَيَهْدِيَكُمْ	سُنَنَ
निहायत रहम करने वाला है	चाहता है	अल्लाह	कि वो वाज़ेह करदे	तुम्हारे लिए	और वो हिदायत दे तुम्हें	तरीक़ों की

الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِكُمْ	وَيَتُوْبَ	عَلَيْكُمْ ط	وَاللّٰهُ	عَلِيْمٌ	حَكِيْمٌ ﴿26﴾
उन लोगों के जो	तुमसे पहले थे	और वो मेहरबान हो	तुम पर	और अल्लाह	बहुत इल्म वाला है	बहुत हिक्मत वाला है

وَاللّٰهُ	يُرِيْدُ	اَنْ	يَّتُوْبَ	عَلَيْكُمْ قف	وَيُرِيْدُ	الَّذِيْنَ
और अल्लाह	चाहता है	कि	वो मेहरबान हो	तुम पर	और चाहते हैं	वो जो

يَتَّبِعُوْنَ	الشَّهَوٰتِ	اَنْ	تَمِيْلُوْا	مَيْلًا	عَظِيْمًا ﴿27﴾	يُرِيْدُ
पैरवी करते हैं	ख़्वाहिशात की	कि	तुम झुक जाओ	झुक जाना	बहुत बड़ा	चाहता है

اللّٰهُ	اَنْ	يُّخَفِّفَ	عَنْكُمْ ج	وَخُلِقَ	الْاِنْسَانُ	ضَعِيْفًا ﴿28﴾
अल्लाह	कि	वो हल्का कर दे	तुमसे	और पैदा किया गया है	इंसान	कमज़ोर

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	لَا تَاْكُلُوْۤا	اَمْوَالَكُمْ	بَيْنَكُمْ	بِالْبَاطِلِ	اِلَّاۤ
ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	ना तुम खाओ	अपने मालों को	आपस में	बातिल तरीक़े से	मगर

اَنْ	تَكُوْنَ	تِجَارَةً	عَنْ تَرَاضٍ	مِّنْكُمْ قف	وَلَا	تَقْتُلُوْۤا
ये कि	हो	तिजारत	बाहमी रज़ामंदी से	तुम्हारी	और ना	तुम क़त्ल करो

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَّفْعَلْ	وَمَنْ	رَحِيْمًا (29)	بِكُمْ	كَانَ	اللّٰهَ	اِنَّ	اَنْفُسَكُمْ ط
करेगा	और जो कोई	निहायत रहम करने वाला	तुम पर	है	अल्लाह	बेशक	अपने नफ़्सों को

ذٰلِكَ	وَكَانَ	نَارًا ط	نُصْلِيْهِ	فَسَوْفَ	وَّظُلْمًا	عُدْوَانًا	ذٰلِكَ
ये	और है	आग में	हम जलाऐंगे उसे	पस अनक़रीब	और ज़ुल्म से	ज़्यादती	ये

عَنْهُ	تُنْهَوْنَ	مَا	كَبَآئِرَ	تَجْتَنِبُوْا	اِنْ	يَسِيْرًا (30)	عَلَى اللّٰهِ
जिनसे	तुम रोके जाते हो	वो जो	बड़े गुनाहों से	तुम इज्तिनाब करो/बचो	अगर	निहायत आसान	अल्लाह पर

وَلَا	كَرِيْمًا (31)	مُّدْخَلًا	وَنُدْخِلْكُمْ	سَيِّاٰتِكُمْ	عَنْكُمْ	نُكَفِّرْ
और ना	इज़्ज़त से	दाख़िल करना	और हम दाख़िल करेंगे तुम्हें	बुराईयां तुम्हारी	तुमसे	हम दूर कर देंगे

لِلرِّجَالِ	عَلٰى بَعْضٍ ط	بَعْضَكُمْ	بِهٖ	اللّٰهُ	فَضَّلَ	مَا	تَتَمَنَّوْا
मर्दों के लिए है	बाज़ पर	तुम्हारे बाज़ को	साथ उसके	अल्लाह ने	फ़ज़ीलत दी	उसकी जो	तुम तमन्ना करो

اكْتَسَبْنَ ط	مِّمَّا	نَصِيْبٌ	وَلِلنِّسَآءِ	اكْتَسَبُوْا ط	مِّمَّا	نَصِيْبٌ
उन्होंने कमाया	उसमें से जो	एक हिस्सा	और औरतों के लिए है	उन्होंने कमाया	उसमें से जो	एक हिस्सा

عَلِيْمًا (32)	شَيْءٍ	بِكُلِّ	كَانَ	اللّٰهَ	اِنَّ	مِنْ فَضْلِهٖ ط	اللّٰهَ	وَسْئَلُوا
ख़ूब जानने वाला	चीज़ को	हर	है	अल्लाह	बेशक	उसके फ़ज़्ल का	अल्लाह से	और सवाल करो

وَالْاَقْرَبُوْنَ ط	الْوَالِدٰنِ	تَرَكَ	مِمَّا	مَوَالِيَ	جَعَلْنَا	وَلِكُلٍّ
और रिश्तेदार	वालिदैन	छोड़ जाऐं	उसमें से जो	वारिस	बना दिए हमने	और हर एक के लिए

اللّٰهَ	اِنَّ	نَصِيْبَهُمْ ط	فَاٰتُوْهُمْ	اَيْمَانُكُمْ	عَقَدَتْ	وَالَّذِيْنَ
अल्लाह	बेशक	हिस्सा उनका	पस दो तुम उन्हें	तुम्हारे अहदो पैमान ने	बांध रखा है	और वो जिनको

عَلَى النِّسَآءِ	قَوّٰمُوْنَ	اَلرِّجَالُ	شَهِيْدًا (33) ع	شَيْءٍ	كُلِّ	عَلٰى	كَانَ	ع 5 8 2
औरतों पर	ज़िम्मेदार हैं	मर्द	ख़ूब गवाह	चीज़ के	हर	ऊपर	है	

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَنْفَقُوْا	وَّبِمَآ	عَلٰى بَعْضٍ	بَعْضَهُمْ	اللّٰهُ	فَضَّلَ	بِمَا
उन्हों ने ख़र्च किया	और बवजह उसके जो	बाज़ पर	उनके बाज़ को	अल्लाह ने	फ़ज़ीलत दी	बवजह उसके जो

بِمَا	لِّلْغَيْبِ	حٰفِظٰتٌ	قٰنِتٰتٌ	فَالصّٰلِحٰتُ	مِنْ اَمْوَالِهِمْ ؕ
बवजह उसके जो	ग़ायबाना	हिफ़ाज़त करने वालियां हैं	फ़रमांबरदार हैं	पस नेक औरतें	अपने मालों में से

فَعِظُوْهُنَّ	نُشُوْزَهُنَّ	تَخَافُوْنَ	وَالّٰتِىْ	اللّٰهُ ؕ	حَفِظَ
पस नसीहत करो उन्हें	उनकी सरकशी से	तुम डरते हो	और वो औरतें जो	अल्लाह ने	हिफ़ाज़त की(उनकी)

اَطَعْنَكُمْ	فَاِنْ	وَاضْرِبُوْهُنَّ ۚ	فِى الْمَضَاجِعِ	وَاهْجُرُوْهُنَّ
वो इताअत करें तुम्हारी	फिर अगर	और मारो उन्हें	बिस्तरों में	और अलहैदा कर दो उन्हें

كَبِيْرًا 34	عَلِيًّا	كَانَ	اللّٰهَ	اِنَّ	سَبِيْلًا ؕ	عَلَيْهِنَّ	تَبْغُوْا	فَلَا
बहुत बड़ा	बहुत बुलंद	है	अल्लाह	बेशक	कोई रास्ता	उन पर	तुम तलाश करो	तो ना

مِّنْ اَهْلِهٖ	حَكَمًا	فَابْعَثُوْا	بَيْنِهِمَا	شِقَاقَ	خِفْتُمْ	وَاِنْ
उस (मर्द) के घरवालों में से	एक मुंसिफ़	तो मुक़र्रर करो	उन दोनों के दर्मियान	इख़्तिलाफ़ से	डरो तुम	और अगर

يُّوَفِّقِ	اِصْلَاحًا	يُّرِيْدَآ	اِنْ	مِّنْ اَهْلِهَا ۚ	وَحَكَمًا
मुवाफ़िक़त पैदा करदे गा	इस्लाह करना	वो दोनों चाहेंगे	अगर	उस (औरत) के घर वालों में से	और एक मुंसिफ़

وَاعْبُدُوا	خَبِيْرًا 35	عَلِيْمًا	كَانَ	اللّٰهَ	اِنَّ	بَيْنَهُمَا ؕ	اللّٰهُ
और इबादत करो	ख़ूब ख़बर रखने वाला	ख़ूब इल्म वाला	है	अल्लाह	बेशक	उन दोनों के दर्मियान	अल्लाह

اِحْسَانًا	وَّبِالْوَالِدَيْنِ	شَيْـًٔا	بِهٖ	تُشْرِكُوْا	وَلَا	اللّٰهَ
एहसान करना	और साथ वालिदैन के	किसी चीज़ को	साथ उसके	तुम शरीक करो	और ना	अल्लाह की

ذِى الْقُرْبٰى	وَالْجَارِ	وَالْمَسٰكِيْنِ	وَالْيَتٰمٰى	وَّبِذِى الْقُرْبٰى
क़राबतदार के	और पड़ोसी	और मिस्कीनों के	और यतीमों के	और साथ क़राबतदारों के

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَمَا	وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ	بِالْجَنْۢبِ	وَالصَّاحِبِ	الْجُنُبِ	وَالْجَارِ
और जिनके	और मुसाफ़िर/राहगीर के	पहलू के	और साथी	अजनबी के	और पड़ोसी

مُخْتَالًا	كَانَ	مَنْ	لَا يُحِبُّ	اللّٰهَ	اِنَّ	اَيْمَانُكُمْ ؕ	مَلَكَتْ
ख़ुद पसंद	हो	उसे जो	नहीं वो पसंद करता	अल्लाह	बेशक	दाऐं हाथ तुम्हारे	मालिक हुए

بِالْبُخْلِ	النَّاسَ	وَيَاْمُرُوْنَ	يَبْخَلُوْنَ	الَّذِيْنَ	فَخُوْرَا ۨ ۙ (36)
बुख़्ल का	लोगों को	और वो हुक्म देते हैं	बुख़्ल करते हैं	वो लोग जो	फ़ख़्र करने वाला

لِلْكٰفِرِيْنَ	وَاَعْتَدْنَا	مِنْ فَضْلِهٖ ؕ	اللّٰهُ	اٰتٰىهُمُ	مَآ	وَيَكْتُمُوْنَ
काफ़िरों के लिए	और तैयार कर रखा है हमने	अपने फ़ज़्ल से	अल्लाह ने	दिया उन्हें	उसको जो	और वो छुपाते हैं

النَّاسِ	رِئَآءَ	اَمْوَالَهُمْ	يُنْفِقُوْنَ	وَالَّذِيْنَ	مُّهِيْنًا ۚ (37)	عَذَابًا
लोगों को	दिखाने के लिए	अपने मालों को	ख़र्च करते हैं	और वो जो	रुस्वा करने वाला	अज़ाब

الشَّيْطٰنُ	يَّكُنِ	وَمَنْ	بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ	وَلَا	بِاللّٰهِ	يُؤْمِنُوْنَ	وَلَا
शैतान	हो	और जो कोई	आख़िरी दिन पर	और ना	अल्लाह पर	वो ईमान रखते	और नहीं

اٰمَنُوْا	لَوْ	عَلَيْهِمْ	وَمَاذَا	قَرِيْنًا (38)	فَسَآءَ	قَرِيْنًا	لَهٗ
वो ईमान ले आते	अगर	उन पर	और क्या (आफ़त आती)	साथी	तो कितना बुरा है	साथी	उसका

وَكَانَ	اللّٰهُ ؕ	رَزَقَهُمُ	مِمَّا	وَاَنْفَقُوْا	وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ	بِاللّٰهِ
और है	अल्लाह ने	रिज़्क़ दिया उन्हें	उसमें से जो	और वो ख़र्च करते	और आख़िरी दिन पर	अल्लाह पर

وَاِنْ	ذَرَّةٍ ۚ	مِثْقَالَ	لَا يَظْلِمُ	اللّٰهَ	اِنَّ	عَلِيْمًا (39)	بِهِمْ	اللّٰهُ
और अगर	ज़र्रे के	बराबर	नहीं वो ज़ुल्म करता	अल्लाह	बेशक	ख़ूब जानने वाला	उन्हें	अल्लाह

عَظِيْمًا (40)	اَجْرًا	مِنْ لَّدُنْهُ	وَيُؤْتِ	يُّضٰعِفْهَا	حَسَنَةً	تَكُ
बहुत बड़ा	अज्र	अपने पास से	और वो देगा	वो दो गुना कर देगा उसे	एक नेकी	हो

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وقف النبي عليه السلام

بِكَ	وَّجِئْنَا	بِشَهِيْدٍ	مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ	جِئْنَا	اِذَا	فَكَيْفَ
आपको	और लाऐंगे हम	एक गवाह	हर उम्मत से	लाऐंगे हम	जब	फिर क्या हाल होगा

وَعَصَوُا	كَفَرُوْا	الَّذِيْنَ	يَّوَدُّ	يَوْمَئِذٍ	شَهِيْدًا ﲾ (41)	عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ
और नाफ़रमानी की	कुफ़्र किया	वो जिन्होंने	चाहेंगे	जिस दिन	गवाह	उन सब पर

اللّٰهَ	يَكْتُمُوْنَ	وَلَا	الْاَرْضُ ؕ	بِهِمُ	تُسَوّٰى	لَوْ	الرَّسُوْلَ
अल्लाह से	वो छुपा सकेंगे	और ना	ज़मीन	उन पर	बराबर कर दी जाए	काश	रसूल की

ع 6 9 3

وَاَنْتُمْ	الصَّلٰوةَ	لَا تَقْرَبُوا	اٰمَنُوْا	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	حَدِيْثًا ع (42)
जबकि तुम	नमाज़ के	ना तुम क़रीब जाओ	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो	कोई बात

اِلَّا	جُنُبًا	وَلَا	تَقُوْلُوْنَ	مَا	تَعْلَمُوْا	حَتّٰى	سُكٰرٰى
मगर	हालते जनाबत में	और ना	तुम कहते हो	जो	तुम जान लो	यहां तक कि	नशे में हो

مَّرْضٰٓى	كُنْتُمْ	وَاِنْ	تَغْتَسِلُوْا ؕ	حَتّٰى	سَبِيْلٍ	عَابِرِيْ
मरीज़	हो तुम	और अगर	तुम गुस्ल कर लो	यहां तक कि	रास्ते को	उबूर करने वाले हो

اَوْ	مِّنَ الْغَآئِطِ	مِّنْكُمْ	اَحَدٌ	جَآءَ	اَوْ	عَلٰى سَفَرٍ	اَوْ
या	क़ज़ाए हाजत से	तुम में से	कोई एक	आया	या	सफ़र पर	या

طَيِّبًا	صَعِيْدًا	فَتَيَمَّمُوْا	مَآءً	تَجِدُوْا	فَلَمْ	النِّسَآءَ	لٰمَسْتُمُ
पाक से	मिट्टी	तो तयम्मुम कर लो	पानी	तुम पाओ	फिर ना	औरतों को	छुआ हो तुमने

عَفُوًّا	كَانَ	اللّٰهَ	اِنَّ	وَاَيْدِيْكُمْ ؕ	بِوُجُوْهِكُمْ	فَامْسَحُوْا
बहुत माफ़ करने वाला	है	अल्लाह	बेशक	और अपने हाथों का	अपने चेहरों का	फिर मसह करो

مِّنَ الْكِتٰبِ	نَصِيْبًا	اُوْتُوْا	اِلَى الَّذِيْنَ	تَرَ	اَلَمْ	غَفُوْرًا (43)
किताब में से	एक हिस्सा	दिए गए	तरफ़ उनके जो	आपने देखा	क्या नहीं	बहुत बख़्शने वाला

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَاللّٰهُ	السَّبِيْلَ ط 44	تَضِلُّوا	اَنْ	وَيُرِيْدُوْنَ	الضَّلٰلَةَ	يَشْتَرُوْنَ
और अल्लाह	रास्ते से	तुम भटक जाओ	कि	और वो चाहते हैं	गुमराही को	वो ख़रीदते हैं

نَصِيْرًا 45	بِاللّٰهِ	وَّكَفٰى	وَلِيًّا ۙ	بِاللّٰهِ	وَكَفٰى	بِاَعْدَآئِكُمْ ط	اَعْلَمُ
मददगार	अल्लाह	और काफ़ी है	दोस्त	अल्लाह	और काफ़ी है	तुम्हारे दुश्मनों को	ज़्यादा जानता है

وَيَقُوْلُوْنَ	عَنْ مَّوَاضِعِهٖ	الْكَلِمَ	يُحَرِّفُوْنَ	هَادُوْا	مِنَ الَّذِيْنَ
और वो कहते हैं	उनकी जगहों से	अलफ़ाज़ को	वो तब्दील कर देते हैं	यहूदी बन गए	उन लोगों में से जो

لَيًّا	وَّرَاعِنَا	غَيْرَ مُسْمَعٍ	وَاسْمَعْ	وَعَصَيْنَا	سَمِعْنَا
मोड़ते हुए	और राइना (कहते हैं)	ना सुनवाए जाओ	और सुनो तुम	और नाफ़रमानी की हमने	सुना हमने

قَالُوْا	اَنَّهُمْ	وَلَوْ	فِى الدِّيْنِ ط	وَطَعْنًا	بِاَلْسِنَتِهِمْ
वो कहते	बेशक वो	और अगर	दीन में	और ऐब लगाने के लिए	अपनी ज़बानों को

لَّهُمْ	خَيْرًا	لَكَانَ	وَانْظُرْنَا	وَاسْمَعْ	وَاَطَعْنَا	سَمِعْنَا
उनके लिए	बेहतर	अलबत्ता होता	और देखिए हमें	और सुनिए	और इताअत की हमने	सुना हमने

اِلَّا	يُؤْمِنُوْنَ	فَلَا	بِكُفْرِهِمْ	اللّٰهُ	لَّعَنَهُمُ	وَلٰكِنْ	وَاَقْوَمَ ۙ
मगर	वो ईमान लाते	तो नहीं	बवजह उनके कुफ़्र के	अल्लाह ने	लाअनत की उन पर	और लेकिन	और ज़्यादा दुरुस्त

نَزَّلْنَا	بِمَا	اٰمِنُوْا	الْكِتٰبَ	اُوْتُوا	يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ	قَلِيْلًا 46
नाज़िल किया हमने	उस पर जो	ईमान लाओ	किताब	दिए गए हो	ऐ लोगो जो	बहुत थोड़ा

وُجُوْهًا	نَّطْمِسَ	اَنْ	مِّنْ قَبْلِ	مَعَكُمْ	لِّمَا	مُصَدِّقًا
चेहरों को	हम मिटा दें	कि	इससे पहले	तुम्हारे पास है	उसकी जो	तस्दीक़ करने वाला है

لَعَنَّاۤ	كَمَا	نَلْعَنَهُمْ	اَوْ	عَلٰۤى اَدْبَارِهَاۤ	فَنَرُدَّهَا
लाअनत की हमने	जैसा कि	हम लाअनत करें उन पर	या	उनकी पुश्तों पर	फिर हम फेर दें उन्हें

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

أَصْحٰبَ السَّبْتِ ؕ	وَكَانَ	أَمْرُ	اللّٰهِ	مَفْعُوْلًا (47)	إِنَّ	اللّٰهَ
सब्त (हफ़्ता) वालों पर	और है	हुक्म	अल्लाह का	होकर रहने वाला	बेशक	अल्लाह

لَا يَغْفِرُ	أَنْ	يُّشْرَكَ	بِهٖ	وَيَغْفِرُ	مَا	دُوْنَ	ذٰلِكَ
नहीं बख़्शेगा	कि	शिर्क किया जाए	साथ उसके	और वो बख़्श देगा	जो	अलावा है	उसके

لِمَنْ	يَّشَآءُ ج	وَمَنْ	يُّشْرِكْ	بِاللّٰهِ	فَقَدِ	افْتَرٰٓى	إِثْمًا
जिसके लिए	वो चाहेगा	और जो कोई	शिर्क करेगा	साथ अल्लाह के	तो तहक़ीक़	उसने गढ़ लिया	गुनाह

عَظِيْمًا (48)	أَلَمْ	تَرَ	إِلَى الَّذِيْنَ	يُزَكُّوْنَ	أَنْفُسَهُمْ ط	بَلِ
बहुत बड़ा	क्या नहीं	आपने देखा	तरफ़ उनके जो	पाक क़रार देते हैं	अपने नफ़्सों को	बल्कि

اللّٰهُ	يُزَكِّيْ	مَنْ	يَّشَآءُ	وَلَا	يُظْلَمُوْنَ	فَتِيْلًا (49)	اُنْظُرْ	كَيْفَ
अल्लाह	पाक करता है	जिसको	वो चाहता है	और ना	वो जुल्म किए जाएंगे	धागे बराबर	देखो	किस तरह

يَفْتَرُوْنَ	عَلَى اللّٰهِ	الْكَذِبَ ط	وَكَفٰى	بِهٖٓ	إِثْمًا	مُّبِيْنًا (50) ع
वो गढ़ते हैं	अल्लाह पर	झूठ	और काफ़ी है	उसका	गुनाह होना	खुल्लम-खुल्ला

ع 7 8 4

أَلَمْ	تَرَ	إِلَى الَّذِيْنَ	أُوْتُوْا	نَصِيْبًا	مِّنَ الْكِتٰبِ	يُؤْمِنُوْنَ
क्या नहीं	आपने देखा	तरफ़ उनके जो	दिए गए	एक हिस्सा	किताब में से	वो ईमान लाते हैं

بِالْجِبْتِ	وَالطَّاغُوْتِ	وَيَقُوْلُوْنَ	لِلَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	هٰٓؤُلَآءِ
साथ जिब्त (जादू)	और ताग़ूत (शैतान) के	और वो कहते हैं	उनके लिए जिन्होंने	कुफ़्र किया	यह लोग

أَهْدٰى	مِنَ الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	سَبِيْلًا (51)	أُولٰٓئِكَ	الَّذِيْنَ	لَعَنَهُمُ
ज़्यादा हिदायत याफ़्ता हैं	उनसे जो	ईमान लाए	रास्ते के ऐतबार से	यही लोग हैं	वो जो	लानत की उन पर

اللّٰهُ ط	وَمَنْ	يَّلْعَنِ	اللّٰهُ	فَلَنْ	تَجِدَ	لَهٗ	نَصِيْرًا (52) ط
अल्लाह ने	और जिस पर	लानत कर दे	अल्लाह	तो हरगिज़ नहीं	आप पाएंगे	उसके लिए	कोई मददगार

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَمْ	لَهُمْ	نَصِيْبٌ	مِّنَ الْمُلْكِ	فَاِذًا	لَّا يُؤْتُوْنَ	النَّاسَ
या	उनके लिए	कोई हिस्सा है	बादशाहत में से	तो तब	नहीं वो देंगे	लोगों को

نَقِيْرًا (53) لا	اَمْ	يَحْسُدُوْنَ	النَّاسَ	عَلٰى	مَآ	اٰتٰىهُمُ	اللّٰهُ
खजूर की गुठली में सूराख़ बराबर	या	वो हसद करते हैं	लोगों से	ऊपर	उसके जो	दिया उन्हें	अल्लाह ने

مِنْ فَضْلِهٖ ج	فَقَدْ	اٰتَيْنَآ	اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ	الْكِتٰبَ	وَالْحِكْمَةَ
अपने फ़ज़्ल से	पस तहक़ीक़	दी हमने	आले इब्राहीम को	किताब	और हिक्मत

وَاٰتَيْنٰهُمْ	مُّلْكًا	عَظِيْمًا (54)	فَمِنْهُمْ	مَّنْ	اٰمَنَ	بِهٖ
और दी हमने उन्हें	बादशाहत	बहुत बड़ी	तो उनमें से कोई है	जो	ईमान लाया	उस पर

وَمِنْهُمْ	مَّنْ	صَدَّ	عَنْهُ ط	وَكَفٰى	بِجَهَنَّمَ	سَعِيْرًا (55)	اِنَّ
और उनमें से कोई है	जो	रुक गया	उससे	और काफ़ी है	जहन्नम	भड़कती हुई	बेशक

الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	بِاٰيٰتِنَا	سَوْفَ	نُصْلِيْهِمْ	نَارًا ط	كُلَّمَا
वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	साथ हमारी आयात के	अनक़रीब	हम जलाएंगे उन्हें	आग में	जब भी

نَضِجَتْ	جُلُوْدُهُمْ	بَدَّلْنٰهُمْ	جُلُوْدًا	غَيْرَهَا	لِيَذُوْقُوا
पक जाएंगी	खालें उनकी	बदल देंगे हम उन्हें	खालें	इलावा उनके	ताकि वो चखें

الْعَذَابَ ط	اِنَّ	اللّٰهَ	كَانَ	عَزِيْزًا	حَكِيْمًا (56)	وَالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا
अज़ाब को	बेशक	अल्लाह	है	बहुत ज़बरदस्त	बहुत हिक्मत वाला	और वो जो	ईमान लाए

ربع

وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ	سَنُدْخِلُهُمْ	جَنّٰتٍ	تَجْرِيْ	مِنْ تَحْتِهَا
और उन्होंने अमल किए	नेक	ज़रूर हम दाख़िल करेंगे उन्हें	बाग़ात में	बहती हैं	उनके नीचे से

الْاَنْهٰرُ	خٰلِدِيْنَ	فِيْهَآ	اَبَدًا ط	لَهُمْ	فِيْهَآ	اَزْوَاجٌ	مُّطَهَّرَةٌ ز
नहरें	हमेशा रहने वाले हैं	उनमें	हमेशा-हमेशा	उनके लिए	उनमें	बीवियां हैं	इन्तिहाई पाकीज़ा

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَّنُدْخِلُهُمْ	ظِلًّا	ظَلِيْلًا (57)	اِنَّ	اللّٰهَ	يَاْمُرُكُمْ	اَنْ	تُؤَدُّوا
और हम दाख़िल करेंगे उन्हें	साए में	घने	बेशक	अल्लाह	हुक्म देता है तुम्हें	कि	तुम अदा करो

الْاَمٰنٰتِ	اِلٰٓى اَهْلِهَا ۙ	وَاِذَا	حَكَمْتُمْ	بَيْنَ	النَّاسِ	اَنْ
अमानतों को	तरफ़ उनके अहल के	और जब	फ़ैसला करो तुम	दर्मियान	लोगों के	ये कि

تَحْكُمُوْا	بِالْعَدْلِ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	نِعِمَّا	يَعِظُكُمْ	بِهٖ ؕ	اِنَّ
तुम फ़ैसला करो	साथ अदल के	बेशक	अल्लाह	बहुत अच्छी है जो	वो नसीहत करता है तुम्हें	उसकी	बेशक

اللّٰهَ	كَانَ	سَمِيْعًا	بَصِيْرًا (58)	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْٓا	اَطِيْعُوا	اللّٰهَ
अल्लाह	है	बहुत सुनने वाला	बहुत देखने वाला	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	इताअत करो	अल्लाह की

وَاَطِيْعُوا	الرَّسُوْلَ	وَاُولِي الْاَمْرِ	مِنْكُمْ ۚ	فَاِنْ	تَنَازَعْتُمْ
और इताअत करो	रसूल की	और ऊलुल अम्र की	तुम में से	फिर अगर	तनाज़ेआ(झगड़ा) हो जाए तुम में

فِيْ شَيْءٍ	فَرُدُّوْهُ	اِلَى اللّٰهِ	وَالرَّسُوْلِ	اِنْ	كُنْتُمْ	تُؤْمِنُوْنَ
किसी चीज़ में	तो फेर दो उसे	तरफ़ अल्लाह के	और रसूल के	अगर	हो तुम	तुम ईमान रखते

بِاللّٰهِ	وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ	ذٰلِكَ	خَيْرٌ	وَّاَحْسَنُ	تَاْوِيْلًا (59) ع	اَلَمْ
अल्लाह पर	और आख़िरी दिन पर	ये	बेहतर है	और ज़्यादा अच्छा है	अंजाम के ऐतबार से	क्या नहीं

ع 8 9 5

تَرَ	اِلَى الَّذِيْنَ	يَزْعُمُوْنَ	اَنَّهُمْ	اٰمَنُوْا	بِمَآ	اُنْزِلَ
आपने देखा	तरफ़ उनके जो	दावा करते हैं	बेशक वो	ईमान लाए	उस पर जो	नाज़िल किया गया

اِلَيْكَ	وَمَآ	اُنْزِلَ	مِنْ قَبْلِكَ	يُرِيْدُوْنَ	اَنْ	يَّتَحَاكَمُوْٓا
तरफ़ आपके	और जो	नाज़िल किया गया	आपसे पहले	वो चाहते हैं	कि	वो फ़ैसला ले जाएं

اِلَى الطَّاغُوْتِ	وَقَدْ	اُمِرُوْٓا	اَنْ	يَّكْفُرُوْا	بِهٖ ؕ	وَيُرِيْدُ
तरफ़ तागूत के	हालांकि तहक़ीक़	वो हुक्म दिए गए	कि	वो कुफ़्र करें	उसका	और चाहता है

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَهُمْ	قِيْلَ	وَاِذَا	بَعِيْدًا (60)	ضَلٰلًا	يُّضِلَّهُمْ	اَنْ	الشَّيْطٰنُ
उन्हें	कहा जाता है	और जब	दूर का	गुमराह करना	वो गुमराह कर दे उन्हें	कि	शैतान

الْمُنٰفِقِيْنَ	رَاَيْتَ	وَاِلَى الرَّسُوْلِ	اللّٰهُ	اَنْزَلَ	اِلٰى مَآ	تَعَالَوْا
मुनाफ़िक़ों को	आप देखते हैं	और तरफ़ रसूल के	अल्लाह ने	नाज़िल किया	तरफ़ उसके जो	आओ

مُّصِيْبَةٌ	اَصَابَتْهُمْ	اِذَآ	فَكَيْفَ	صُدُوْدًا (61) ج	عَنْكَ	يَصُدُّوْنَ
कोई मुसीबत	पहुंचती है उन्हें	जब	तो क्या होता है	रुक जाना	आपसे	वो रुकते हैं

اِنْ	بِاللّٰهِ	يَحْلِفُوْنَ ق	جَآءُوْكَ	ثُمَّ	اَيْدِيْهِمْ	قَدَّمَتْ	بِمَا
नहीं	अल्लाह की	क़समें खाते हैं	आ जाते हैं आपके पास	फिर	उनके हाथों ने	आगे भेजा	बवजह उसके जो

اللّٰهُ	يَعْلَمُ	الَّذِيْنَ	اُولٰٓئِكَ	وَّتَوْفِيْقًا (62)	اِحْسَانًا	اِلَّآ	اَرَدْنَآ
अल्लाह	जानता है	वो जो	यही लोग हैं	और मुवाफ़िक़त का	एहसान	मगर	इरादा किया हमने

لَّهُمْ	وَقُلْ	وَعِظْهُمْ	عَنْهُمْ	فَاَعْرِضْ	فِيْ قُلُوْبِهِمْ ق	مَا
उन्हें	और कह दीजिए	और नसीहत कीजिए उन्हें	उनसे	पस आप ऐराज़ कीजिए	उनके दिलों में है	उसको जो

اِلَّا	مِنْ رَّسُوْلٍ	اَرْسَلْنَا	وَمَآ	بَلِيْغًا (63)	قَوْلًا	فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ
मगर	कोई रसूल	भेजा हमने	और नहीं	पहुंचने वाली/पुर असर	बात	उनके दिलों में

اَنْفُسَهُمْ	ظَّلَمُوْٓا	اِذْ	اَنَّهُمْ	وَلَوْ	بِاِذْنِ اللّٰهِ ط	لِيُطَاعَ
अपने नफ़्सों पर	उन्होंने ज़ुल्म किया	जब	बेशक वो	और अगर	अल्लाह के इज़्न से	ताकि वो इताअत किया जाए

لَوَجَدُوا	الرَّسُوْلُ	لَهُمُ	وَاسْتَغْفَرَ	اللّٰهَ	فَاسْتَغْفَرُوا	جَآءُوْكَ
अलबत्ता वो पाते	रसूल	उनके लिए	और बख़्शिश मांगते	अल्लाह से	फिर वो बख़्शिश मांगते	वो आ जाते आपके पास

حَتّٰى	لَا يُؤْمِنُوْنَ	رَبِّكَ	وَ	فَلَا	رَّحِيْمًا (64)	تَوَّابًا	اللّٰهَ
यहां तक कि	नहीं वो मोमिन हो सकते	आपके रब की	क़सम है	पस नहीं	निहायत रहम करने वाला	बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला	अल्लाह को

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ	لَا يَجِدُوْا	ثُمَّ	بَيْنَهُمْ	شَجَرَ	فِيْمَا	يُحَكِّمُوْكَ
अपने नफ़्सों में	ना वो पाऐं	फिर	दर्मियान उनके	इख़्तिलाफ़ हुआ	उस मामले में जो	वो मुंसिफ़ बनाऐं आपको

اَنَّا	وَلَوْ	تَسْلِيْمًا (65)	وَيُسَلِّمُوْا	قَضَيْتَ	مِّمَّا	حَرَجًا
बेशक हम	और अगर	पूरी तरह तसलीम करना	और वो तसलीम कर लें	फ़ैसला करें आप	उससे जो	कोई तंगी

مِّنْ دِيَارِكُمْ	اخْرُجُوْا	اَوِ	اَنْفُسَكُمْ	اقْتُلُوْٓا	اَنِ	عَلَيْهِمْ	كَتَبْنَا
अपने घरों से	निकल जाओ	या	अपने नफ़्सों को	क़त्ल करो	कि	उन पर	लिख देते हम

مَا	فَعَلُوْا	اَنَّهُمْ	وَلَوْ	مِّنْهُمْ ط	قَلِيْلٌ	اِلَّا	فَعَلُوْهُ	مَّا
जो	करते	बेशक वो	और अगर	उनमें से	थोड़े	मगर	वो करते उसे	ना

وَّاِذًا	تَثْبِيْتًا (66) لا	وَّاَشَدَّ	لَّهُمْ	خَيْرًا	لَكَانَ	بِهٖ	يُوْعَظُوْنَ
और तब	साबित क़दमी में	और ज़्यादा शदीद	उनके लिए	बेहतर	अलबत्ता होता	जिसकी	वो नसीहत किए जाते हैं

صِرَاطًا	وَّلَهَدَيْنٰهُمْ	عَظِيْمًا (67) لا	اَجْرًا	مِّنْ لَّدُنَّآ	لَّاٰتَيْنٰهُمْ
रास्ते	और अलबत्ता हिदायत देते हम उन्हें	बहुत बड़ा	अज्र	अपने पास से	अलबत्ता देते हम उन्हें

الَّذِيْنَ	مَعَ	فَاُولٰٓئِكَ	وَالرَّسُوْلَ	اللّٰهَ	يُّطِعِ	وَمَنْ	مُّسْتَقِيْمًا (68)
उन लोगों के	साथ होंगे	तो यही लोग	और रसूल की	अल्लाह की	इताअत करेगा	और जो कोई	सीधे की

وَالشُّهَدَآءِ	وَالصِّدِّيْقِيْنَ	مِّنَ النَّبِيّٖنَ	عَلَيْهِمْ	اللّٰهُ	اَنْعَمَ
और शोहदा	और सिद्दीक़ीन	नबियों में से	जिन पर	अल्लाह ने	इनाम किया

مِنَ اللّٰهِ ط	الْفَضْلُ	ذٰلِكَ	رَفِيْقًا (69) ط	اُولٰٓئِكَ	وَحَسُنَ	وَالصّٰلِحِيْنَ ج
अल्लाह की तरफ़ से	फ़ज़्ल है	ये	बतौर साथी के	ये लोग	और कितने अच्छे हैं	और सालेहीन में से

ع 9 11 6

حِذْرَكُمْ	خُذُوْا	اٰمَنُوْا	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	عَلِيْمًا (70) ع	بِاللّٰهِ	وَكَفٰى
बचाव (हथियार) अपना	पकड़ो	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो	बहुत इल्म वाला	अल्लाह	और काफ़ी है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَانْفِرُوْا	ثُبَاتٍ	اَوِ	انْفِرُوْا	جَمِيْعًا (71)	وَاِنَّ	مِنْكُمْ	لَمَنْ
फिर निकलो	छोटे दस्तों में	या	निकलो	सब इकट्ठे	और बेशक	तुम में से	अलबत्ता वो है जो

لَّيُبَطِّئَنَّ ۚ	فَاِنْ	اَصَابَتْكُمْ	مُّصِيْبَةٌ	قَالَ	قَدْ	اَنْعَمَ	اللّٰهُ	عَلَيَّ
ज़रूर देर लगाता है	फिर अगर	पहुंचे तुम्हें	कोई मुसीबत	वो कहता है	तहक़ीक़	इनाम किया	अल्लाह ने	मुझ पर

اِذْ	لَمْ	اَكُنْ	مَّعَهُمْ	شَهِيْدًا (72)	وَلَئِنْ	اَصَابَكُمْ	فَضْلٌ
जबकि	ना	था मैं	साथ उनके	हाज़िर/मौजूद	और अलबत्ता अगर	पहुंचे तुम्हें	कोई फ़ज़्ल

مِّنَ اللّٰهِ	لَيَقُوْلَنَّ	كَاَنْ	لَّمْ	تَكُنْۢ	بَيْنَكُمْ	وَبَيْنَهٗ	مَوَدَّةٌ
अल्लाह की तरफ़ से	अलबत्ता वो ज़रूर कहेगा	गोया कि	ना	थी	दर्मियान तुम्हारे	और दर्मियान उसके	कोई मोहब्बत

يٰلَيْتَنِيْ	كُنْتُ	مَعَهُمْ	فَاَفُوْزَ	فَوْزًا	عَظِيْمًا (73)	فَلْيُقَاتِلْ
हाय अफ़सोस मुझ पर	होता मैं	साथ उनके	तो मैं कामयाबी पाता	कामयाबी	बहुत बड़ी	पस चाहिए कि जंग करें

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	الَّذِيْنَ	يَشْرُوْنَ	الْحَيٰوةَ	الدُّنْيَا	بِالْاٰخِرَةِ ؕ	وَمَنْ
अल्लाह के रास्ते में	वो जो	बेच देते हैं	ज़िंदगी	दुनिया की	बदले आख़िरत के	और जो कोई

يُّقَاتِلْ	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	فَيُقْتَلْ	اَوْ	يَغْلِبْ	فَسَوْفَ	نُؤْتِيْهِ
जंग करे	अल्लाह के रास्ते में	फिर वो क़त्ल कर दिया जाए	या	वो ग़ालिब आ जाए	पस अनक़रीब	हम देंगे उसे

اَجْرًا	عَظِيْمًا (74)	وَمَا	لَكُمْ	لَا تُقَاتِلُوْنَ	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
अज्र	बहुत बड़ा	और क्या है	तुम्हें	नहीं तुम जंग करते	अल्लाह के रास्ते में

وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ	مِنَ الرِّجَالِ	وَالنِّسَآءِ	وَالْوِلْدَانِ	الَّذِيْنَ	يَقُوْلُوْنَ
हालांकि जो कमज़ोर हैं	मर्दों में से	और औरतों	और बच्चों (में से)	वो जो	कहते हैं

رَبَّنَآ	اَخْرِجْنَا	مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ	الظَّالِمِ	اَهْلُهَا ۚ	وَاجْعَلْ
ऐ हमारे रब	निकाल हमें	इस बस्ती से	ज़ालिम हैं	रहने वाले इसके	और बना दे

نَصِيْرًا (75) ط	مِنْ لَّدُنْكَ	لَّنَا	وَّاجْعَلْ	وَلِيًّا ۚ	مِنْ لَّدُنْكَ	لَّنَا
कोई मददगार	अपने पास से	हमारे लिए	और बना दे	कोई हिमायती	अपने पास से	हमारे लिए

كَفَرُوْا	وَالَّذِيْنَ	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ	يُقَاتِلُوْنَ	اٰمَنُوْا	اَلَّذِيْنَ
कुफ़्र किया	और वो जिन्होंने	अल्लाह के रास्ते में	वो जंग करते हैं	ईमान लाए	वो जो

اِنَّ	الشَّيْطٰنِ ۚ	اَوْلِيَآءَ	فَقَاتِلُوْٓا	فِيْ سَبِيْلِ الطَّاغُوْتِ	يُقَاتِلُوْنَ
बेशक	शैतान के	दोस्तों से	पस जंग करो	ताग़ूत के रास्ते में	वो जंग करते हैं

10 ع 6 7

قِيْلَ	اِلَى الَّذِيْنَ	تَرَ	اَلَمْ	ضَعِيْفًا (76) ع	كَانَ	الشَّيْطٰنِ	كَيْدَ
कहा गया	तरफ़ उनके	आपने देखा	क्या नहीं	बहुत कमज़ोर	है	शैतान की	चाल

فَلَمَّا	الزَّكٰوةَ ۚ	وَاٰتُوا	الصَّلٰوةَ	وَاَقِيْمُوا	اَيْدِيَكُمْ	كُفُّوْٓا	لَهُمْ
तो जब	ज़कात	और अदा करो	नमाज़	और क़ायम करो	अपने हाथों को	रोके रखो	जिन्हें

النَّاسَ	يَخْشَوْنَ	مِّنْهُمْ	فَرِيْقٌ	اِذَا	الْقِتَالُ	عَلَيْهِمُ	كُتِبَ
लोगों से	वो डर रहे थे	उनमें से	एक गिरोह(के लोग)	तब	जंग करना	उन पर	फ़र्ज़ किया गया

لِمَ	رَبَّنَا	وَقَالُوْا	خَشْيَةً ۚ	اَشَدَّ	اَوْ	اللّٰهِ	كَخَشْيَةِ
क्यों	ऐ हमारे रब	और उन्होंने कहा	डरना	ज़्यादा शदीद	या	अल्लाह से	जैसा डरना

قَرِيْبٍ ط	اِلٰٓى اَجَلٍ	اَخَّرْتَنَآ	لَوْلَآ	الْقِتَالَ ۚ	عَلَيْنَا	كَتَبْتَ
क़रीब की	एक मुद्दत तक	तू ने मोहलत दी हमें	क्यों ना	जंग करना	हम पर	फ़र्ज़ किया तूने

وَلَا	اتَّقٰى قف	لِّمَنِ	خَيْرٌ	وَالْاٰخِرَةُ	قَلِيْلٌ ۚ	الدُّنْيَا	مَتَاعُ	قُلْ
और ना	तक़्वा करे	उसके लिए जो	बेहतर है	और आख़िरत	बहुत थोड़ा है	दुनिया का	फ़ायदा	कह दीजिए

كُنْتُمْ	وَلَوْ	الْمَوْتُ	يُدْرِكْكُّمُ	تَكُوْنُوْا	اَيْنَ مَا	فَتِيْلًا (77)	تُظْلَمُوْنَ
हो तुम	और अगरचे	मौत	पा लेगी तुम्हें	तुम होगे	जहां कहीं	धागे बराबर	तुम ज़ुल्म किए जाओगे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فِیْ بُرُوْجٍ	مُّشَیَّدَةٍ ؕ	وَ اِنْ	تُصِبْهُمْ	حَسَنَةٌ	یَّقُوْلُوْا	هٰذِهٖ
क़िलों में	मज़बूत	और अगर	पहुंचती है उन्हें	कोई भलाई	वो कहते हैं	ये

مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ج	وَ اِنْ	تُصِبْهُمْ	سَیِّئَةٌ	یَّقُوْلُوْا	هٰذِهٖ	مِنْ عِنْدِكَ ؕ
अल्लाह की तरफ़ से है	और अगर	पहुंचती है उन्हें	कोई बुराई	वो कहते हैं	ये	आपकी तरफ़ से है

قُلْ	كُلٌّ	مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ	فَمَالِ	هٰٓؤُلَآءِ	الْقَوْمِ	لَا یَكَادُوْنَ
कह दीजिए	सब कुछ	अल्लाह की तरफ़ से है	तो क्या है वास्ते	इस	क़ौम के	नहीं वो क़रीब होते

یَفْقَهُوْنَ	حَدِیْثًا (78)	مَآ	اَصَابَكَ	مِنْ حَسَنَةٍ	فَمِنَ اللّٰهِ ز	وَ مَآ
कि वो समझें	बात को	जो भी	पहुंचती है तुझको	कोई भलाई	तो अल्लाह की तरफ़ से है	और जो भी

اَصَابَكَ	مِنْ سَیِّئَةٍ	فَمِنْ نَّفْسِكَ ؕ	وَ اَرْسَلْنٰكَ	لِلنَّاسِ	رَسُوْلًا ؕ
पहुंचती है तुझको	कोई बुराई	तो तुम्हारे नफ़्स की तरफ़ से है	और भेजा हमने आपको	लोगों के लिए	रसूल बना कर

وَ كَفٰی	بِاللّٰهِ	شَهِیْدًا (79)	مَنْ	یُّطِعِ	الرَّسُوْلَ	فَقَدْ	اَطَاعَ
और काफ़ी है	अल्लाह	गवाह	जिसने	इताअत की	रसूल की	पस तहक़ीक़	उसने इताअत की

اللّٰهَ ج	وَ مَنْ	تَوَلّٰی	فَمَآ	اَرْسَلْنٰكَ	عَلَیْهِمْ	حَفِیْظًا (80) ؕ	وَ یَقُوْلُوْنَ
अल्लाह की	और जिसने	मुंह मोड़ा	तो नहीं	भेजा हमने आपको	उन पर	निगरान	और वो कहते हैं

طَاعَةٌ ز	فَاِذَا	بَرَزُوْا	مِنْ عِنْدِكَ	بَیَّتَ	طَآئِفَةٌ	مِّنْهُمْ
इताअत (करेंगे)	फिर जब	वो निकलते हैं	आपके पास से	रात को मशवरे करता है	एक गिरोह	उनमें से

غَیْرَ	الَّذِیْ	تَقُوْلُ ؕ	وَاللّٰهُ	یَكْتُبُ	مَا	یُبَیِّتُوْنَ ج	فَاَعْرِضْ
अलावा	उसके जो	आप कहते हैं	और अल्लाह	लिख रहा है	जो	वो रात को मशवरे करते हैं	पस ऐराज़ कीजिए

عَنْهُمْ	وَ تَوَكَّلْ	عَلَی اللّٰهِ ؕ	وَ كَفٰی	بِاللّٰهِ	وَكِیْلًا (81)	اَفَلَا	یَتَدَبَّرُوْنَ
उनसे	और भरोसा कीजिए	अल्लाह पर	और काफ़ी है	अल्लाह	कारसाज़	क्या फिर नहीं	वो तदब्बुर करते

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اخْتِلَافًا	فِيْهِ	لَوَجَدُوْا	اللّٰهِ	غَيْرِ	مِنْ عِنْدِ	كَانَ	وَلَوْ	الْقُرْاٰنَ ؕ
इख़्तिलाफ़	इसमें	अलबत्ता वो पाते	अल्लाह के	ग़ैर	पास से	होता वो	और अगर	क़ुरआन में

اَذَاعُوْا	الْخَوْفِ	اَوِ	مِّنَ الْاَمْنِ	اَمْرٌ	جَآءَهُمْ	وَاِذَا	كَثِيْرًا ﴿82﴾
वो फैला देते हैं	ख़ौफ़ में से	या	अमन में से	कोई मामला	आता है उनके पास	और जब	बहुत ज़्यादा

مِنْهُمْ	اُولِي الْاَمْرِ	وَاِلٰٓى	اِلَى الرَّسُوْلِ	رَدُّوْهُ	وَلَوْ	بِهٖ ؕ
उनमें से	ऊलुल अम्र के	और तरफ़	तरफ़ रसूल के	वो लौटाते उसे	और अगर	उसे

اللّٰهِ	فَضْلُ	وَلَوْلَا	مِنْهُمْ ؕ	يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ	الَّذِيْنَ	لَعَلِمَهُ
अल्लाह का	फ़ज़्ल	और अगर ना होता	उनमें से	निकाल लाते हैं नतीजा उसका	वो जो	अलबत्ता जान लेते उसे

فَقَاتِلْ	قَلِيْلًا ﴿83﴾	اِلَّا	الشَّيْطٰنَ	لَاتَّبَعْتُمُ	وَرَحْمَتُهٗ	عَلَيْكُمْ
तो जंग कीजिए	बहुत थोड़े	मगर	शैतान की	अलबत्ता पैरवी करते तुम	और रहमत उसकी	तुम पर

الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ	وَحَرِّضِ	نَفْسَكَ	اِلَّا	لَا تُكَلَّفُ	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ
मोमिनों को	और उभारिए	अपनी जान के	मगर	नहीं आप मुकल्लफ़ बनाए गए	अल्लाह के रास्ते में

اَشَدُّ	وَاللّٰهُ	كَفَرُوْا ؕ	الَّذِيْنَ	بَاْسَ	يَّكُفَّ	اَنْ	اللّٰهُ	عَسَى
ज़्यादा सख़्त है	और अल्लाह	कुफ़्र किया	उनकी जिन्होंने	जंग	वो रोक दे	कि	अल्लाह	उम्मीद है

يَّكُنْ	حَسَنَةً	شَفَاعَةً	يَّشْفَعْ	مَنْ	تَنْكِيْلًا ﴿84﴾	وَّاَشَدُّ	بَاْسًا
होगा	अच्छी	सिफ़ारिश	सिफ़ारिश करेगा	जो कोई	इबरतनाक सज़ा देने में	और ज़्यादा सख़्त है	ताक़त में

يَّكُنْ	سَيِّئَةً	شَفَاعَةً	يَّشْفَعْ	وَمَنْ	مِّنْهَا ۚ	نَصِيْبٌ	لَّهٗ
होगा	बुरी	सिफ़ारिश	सिफ़ारिश करेगा	और जो कोई	उसमें से	एक हिस्सा	उसके लिए

مُّقِيْتًا ﴿85﴾	شَيْءٍ	كُلِّ	عَلٰى	اللّٰهُ	وَكَانَ	مِّنْهَا ؕ	كِفْلٌ	لَّهٗ
निगरान	चीज़ के	हर	ऊपर	अल्लाह	और है	उसमें से	एक हिस्सा	उसके लिए

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَاِذَا	حُيِّيْتُمْ	بِتَحِيَّةٍ	فَحَيُّوْا	بِاَحْسَنَ	مِنْهَآ	اَوْ	رُدُّوْهَا ؕ
और जब	दुआ दिए जाओ तुम	कोई दुआ	तो तुम भी दुआ दो	ज़्यादा अच्छी	उससे	या	लौटा दो उसे

النِّصف

اِنَّ	اللّٰهَ	كَانَ	عَلٰى	كُلِّ	شَیْءٍ	حَسِيْبًا (86)	اَللّٰهُ	لَآ	اِلٰهَ
बेशक	अल्लाह	है	ऊपर	हर	चीज़ के	ख़ूब हिसाब लेने वाला	अल्लाह	नहीं	कोई इलाह (बरहक़)

اِلَّا	هُوَ ؕ	لَيَجْمَعَنَّكُمْ	اِلٰى يَوْمِ	الْقِيٰمَةِ	لَا	رَيْبَ	فِيْهِ ؕ	وَمَنْ
मगर	वही	अलबत्ता वो ज़रूर जमा करेगा तुम्हें	तरफ़ दिन	क़यामत के	नहीं	कोई शक	इसमें	और कौन

ع 11 11 8

اَصْدَقُ	مِنَ اللّٰهِ	حَدِيْثًا ع (87)	فَمَا	لَكُمْ	فِی الْمُنٰفِقِيْنَ	فِئَتَيْنِ
ज़्यादा सच्चा है	अल्लाह से (बढ़ कर)	बात में	तो क्या है	तुम्हें	मुनाफ़िक़ों के बारे में	दो गिरोह(हो गए हो)

وَاللّٰهُ	اَرْكَسَهُمْ	بِمَا	كَسَبُوْا ؕ	اَتُرِيْدُوْنَ	اَنْ	تَهْدُوْا	مَنْ
और अल्लाह ने	उल्टा फेर दिया उन्हें	बवजह उसके जो	उन्होंने कमाई की	क्या तुम चाहते हो	कि	तुम हिदायत दो	उसको जिसे

اَضَلَّ	اللّٰهُ ؕ	وَمَنْ	يُّضْلِلِ	اللّٰهُ	فَلَنْ	تَجِدَ	لَهٗ	سَبِيْلًا (88)
गुमराह कर दिया	अल्लाह ने	और जिसे	गुमराह कर दे	अल्लाह	तो हरगिज़ नहीं	तुम पाओगे	उसके लिए	कोई रास्ता

وَدُّوْا	لَوْ	تَكْفُرُوْنَ	كَمَا	كَفَرُوْا	فَتَكُوْنُوْنَ	سَوَآءً	فَلَا
वो दिल से चाहते हैं	कि काश	तुम कुफ़्र करो	जैसा कि	उन्होंने कुफ़्र किया	तो तुम हो जाओ	बराबर	तो ना

تَتَّخِذُوْا	مِنْهُمْ	اَوْلِيَآءَ	حَتّٰى	يُهَاجِرُوْا	فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ	فَاِنْ
तुम बनाओ	उनमें से	दोस्त	यहां तक कि	वो हिजरत कर जाएं	अल्लाह के रास्ते में	फिर अगर

تَوَلَّوْا	فَخُذُوْهُمْ	وَاقْتُلُوْهُمْ	حَيْثُ	وَجَدْتُّمُوْهُمْ ص	وَلَا
वो मुंह मोड़ जाएं	तो पकड़ो उन्हें	और क़त्ल करो उन्हें	जहां कहीं	पाओ तुम उन्हें	और ना

تَتَّخِذُوْا	مِنْهُمْ	وَلِيًّا	وَّلَا	نَصِيْرًا (89) لا	اِلَّا	الَّذِيْنَ	يَصِلُوْنَ
तुम बनाओ	उनमें से	कोई दोस्त	और ना	कोई मददगार	सिवाय	उन लोगों के जो	जा मिलते हैं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِلٰى قَوۡمٍۭ	بَيۡنَكُمۡ	وَبَيۡنَهُمۡ	مِّيۡثَاقٌ	اَوۡ	جَآءُوۡكُمۡ	حَصِرَتۡ
एक क़ौम से	दर्मियान तुम्हारे	और दर्मियान उनके	पुख़्ता अहद है	या	वो आते हैं तुम्हारे पास	कि तंग होगए

صُدُوۡرُهُمۡ	اَنۡ	يُّقَاتِلُوۡكُمۡ	اَوۡ	يُقَاتِلُوۡا	قَوۡمَهُمۡ ؕ	وَلَوۡ	شَآءَ	اللّٰهُ
सीने उनके	कि	वो जंग करें तुमसे	या	वो जंग करें	अपनी क़ौम से	और अगर	चाहता	अल्लाह

لَسَلَّطَهُمۡ	عَلَيۡكُمۡ	فَلَقٰتَلُوۡكُمۡ ۚ	فَاِنِ	اعۡتَزَلُوۡكُمۡ	فَلَمۡ	يُقَاتِلُوۡكُمۡ
अलबत्ता मुसल्लत कर देता उन्हें	तुम पर	पस ज़रूर वो जंग करते तुमसे	फिर अगर	वो अलग रहें तुमसे	फिर ना	वो जंग करें तुमसे

وَاَلۡقَوۡا	اِلَيۡكُمُ	السَّلَمَ ۙ	فَمَا	جَعَلَ	اللّٰهُ	لَكُمۡ	عَلَيۡهِمۡ
और वो डालें	तरफ़ तुम्हारे	सुलाह को	तो नहीं	बनाया	अल्लाह ने	तुम्हारे लिए	उन पर

سَبِيۡلًا ﴿90﴾	سَتَجِدُوۡنَ	اٰخَرِيۡنَ	يُرِيۡدُوۡنَ	اَنۡ	يَّاۡمَنُوۡكُمۡ	وَيَاۡمَنُوۡا
कोई रास्ता	अनक़रीब तुम पाओगे	कुछ दूसरों को	वो चाहते हैं	कि	वो अमन में रहें तुमसे	और वो अमन में रहें

قَوۡمَهُمۡ ؕ	كُلَّمَا	رُدُّوۡۤا	اِلَى الۡفِتۡنَةِ	اُرۡكِسُوۡا	فِيۡهَا ۚ	فَاِنۡ
अपनी क़ौम से	जब कभी	वो लौटाए जाते हैं	तरफ़ फ़ितने के	वो उल्टा दिए जाते हैं	उसमें	फिर अगर

لَّمۡ	يَعۡتَزِلُوۡكُمۡ	وَيُلۡقُوۡۤا	اِلَيۡكُمُ	السَّلَمَ	وَيَكُفُّوۡۤا	اَيۡدِيَهُمۡ
ना	वो अलग रहें तुमसे	और(ना) वो डालें	तरफ़ तुम्हारे	सुलह को	और(ना) वो रोकें	अपने हाथों को

فَخُذُوۡهُمۡ	وَاقۡتُلُوۡهُمۡ	حَيۡثُ	ثَقِفۡتُمُوۡهُمۡ ؕ	وَاُولٰٓئِكُمۡ	جَعَلۡنَا	لَكُمۡ
तो पकड़ो उन्हें	और क़त्ल करो उन्हें	जहां कहीं	पाओ तुम उन्हें	और यही वो लोग हैं	बनाया हमने	तुम्हारे लिए

عَلَيۡهِمۡ	سُلۡطٰنًا	مُّبِيۡنًا ﴿91﴾ ع	وَمَا	كَانَ	لِمُؤۡمِنٍ	اَنۡ	يَّقۡتُلَ
जिन पर	ग़लबा	वाज़ेह	और नहीं	है	किसी मोमिन के लिए	कि	वो क़त्ल कर दे

12 ع 4 9

مُؤۡمِنًا	اِلَّا	خَطَـئًا ۚ	وَمَنۡ	قَتَلَ	مُؤۡمِنًا	خَطَـئًا	فَتَحۡرِيۡرُ
किसी मोमिन को	मगर	ख़ता से	और जो	क़त्ल करे	किसी मोमिन को	ख़ता से	तो आज़ाद करना है

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

رَقَبَةٍ	مُّؤْمِنَةٍ	وَّدِيَةٌ	مُّسَلَّمَةٌ	اِلٰٓى	اَهْلِهٖٓ	اِلَّآ
एक गर्दन (ग़ुलाम)	मोमिन का	और दियत	जो सुपुर्द की जाएगी	तरफ़	उसके अहल (वारिस) के	मगर

اَنْ	يَّصَّدَّقُوْا ؕ	فَاِنْ	كَانَ	مِنْ قَوْمٍ	عَدُوٍّ	لَّكُمْ	وَهُوَ
ये कि	वो माफ़ कर दें	फिर अगर	है वो	ऐसी क़ौम से	जो दुश्मन है	तुम्हारी	और वो

مُؤْمِنٌ	فَتَحْرِيْرُ	رَقَبَةٍ	مُّؤْمِنَةٍ ؕ	وَاِنْ	كَانَ	مِنْ قَوْمٍ
मोमिन है	तो आज़ाद करना है	एक गर्दन (ग़ुलाम)	मोमिन का	और अगर	है वो	उस क़ौम से

بَيْنَكُمْ	وَبَيْنَهُمْ	مِّيْثَاقٌ	فَدِيَةٌ	مُّسَلَّمَةٌ	اِلٰٓى	اَهْلِهٖ
दर्मियान तुम्हारे	और दर्मियान उनके	पुख़्ता अहद है	तो दियत	जो सुपुर्द की जाएगी	तरफ़	उसके अहल (वारिस) के

وَتَحْرِيْرُ	رَقَبَةٍ	مُّؤْمِنَةٍ ۚ	فَمَنْ	لَّمْ	يَجِدْ	فَصِيَامُ
और आज़ाद करना है	एक गर्दन (ग़ुलाम)	मोमिन का	तो जो कोई	ना	पाए	पस रोज़े रखना है

شَهْرَيْنِ	مُتَتَابِعَيْنِ ز	تَوْبَةً	مِّنَ اللّٰهِ ؕ	وَكَانَ	اللّٰهُ	عَلِيْمًا
दो माह	मुसलसल/पे-दर-पे	तौबा का (क़ुबूल करना है)	अल्लाह की तरफ़ से	और है	अल्लाह	बहुत इल्म वाला

حَكِيْمًا (92)	وَمَنْ	يَّقْتُلْ	مُؤْمِنًا	مُّتَعَمِّدًا	فَجَزَآؤُهٗ	جَهَنَّمُ
बहुत हिक्मत वाला	और जो	क़त्ल करे	किसी मोमिन को	जान-बूझ कर	तो बदला है उसका	जहन्नम

خٰلِدًا	فِيْهَا	وَغَضِبَ	اللّٰهُ	عَلَيْهِ	وَلَعَنَهٗ	وَاَعَدَّ
हमेशा रहने वाला है	उसमें	और ग़ज़बनाक हुआ	अल्लाह	उस पर	और उसने लानत की उस पर	और उसने तैयार कर रखा है

لَهٗ	عَذَابًا	عَظِيْمًا (93)	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْٓا	اِذَا	ضَرَبْتُمْ
उसके लिए	अज़ाब	बहुत बड़ा	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	जब	सफ़र करो तुम

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	فَتَبَيَّنُوْا	وَلَا	تَقُوْلُوْا	لِمَنْ	اَلْقٰٓى	اِلَيْكُمُ	السَّلٰمَ
अल्लाह के रास्ते में	तो तहक़ीक़ कर लिया करो	और ना	तुम कहो	उसके लिए जो	डाले	तरफ़ तुम्हारे	सलाम

لَسْتَ	مُؤْمِنًا ج	تَبْتَغُوْنَ	عَرَضَ	الْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا	فَعِنْدَ	اللّٰهِ
नहीं हो तुम	मोमिन	तुम चाहते हो	सामान	ज़िंदगी का	दुनिया की	तो पास	अल्लाह के

مَغَانِمُ	كَثِيْرَةٌ ط	كَذٰلِكَ	كُنْتُمْ	مِّنْ قَبْلُ	فَمَنَّ	اللّٰهُ	عَلَيْكُمْ
ग़नीमतें हैं	बहुत सी	इसी तरह	थे तुम	इससे पहले	तो एहसान	अल्लाह ने	तुम पर

فَتَبَيَّنُوْا ط	اِنَّ	اللّٰهَ	كَانَ	بِمَا	تَعْمَلُوْنَ	خَبِيْرًا (94)	لَا يَسْتَوِى
पस तहक़ीक़ कर लिया करो	बेशक	अल्लाह	है	उसकी जो	तुम अमल करते हो	ख़ूब ख़बर रखने वाला	नहीं बराबर हो सकते

الْقٰعِدُوْنَ	مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ	غَيْرُ	اُولِى الضَّرَرِ	وَالْمُجٰهِدُوْنَ
जो बैठने वाले हैं	मोमिनों में से	सिवाए	ज़रर वालों (माज़ूर) के	और जो जिहाद करने वाले हैं

فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	بِاَمْوَالِهِمْ	وَاَنْفُسِهِمْ ط	فَضَّلَ	اللّٰهُ	الْمُجٰهِدِيْنَ
अल्लाह के रास्ते में	साथ अपने मालों के	और अपनी जानों के	फ़ज़ीलत दी	अल्लाह ने	जिहाद करने वालों को

بِاَمْوَالِهِمْ	وَاَنْفُسِهِمْ	عَلَى الْقٰعِدِيْنَ	دَرَجَةً ط	وَكُلًّا	وَّعَدَ
साथ अपने मालों के	और अपनी जानों के	बैठने वालों पर	दर्जे में	और हर एक से	वादा कर रखा है

اللّٰهُ	الْحُسْنٰى ط	وَفَضَّلَ	اللّٰهُ	الْمُجٰهِدِيْنَ	عَلَى الْقٰعِدِيْنَ
अल्लाह ने	अच्छा	और फ़ज़ीलत दी	अल्लाह ने	जिहाद करने वालों को	बैठने वालों पर

اَجْرًا	عَظِيْمًا (95) لا	دَرَجٰتٍ	مِّنْهُ	وَمَغْفِرَةً	وَّرَحْمَةً ط	وَكَانَ
अज्र की	बहुत बड़े	दरजात हैं	उसकी तरफ़ से	और बख़्शिश	और रहमत है	और है

اللّٰهُ	غَفُوْرًا	رَّحِيْمًا (96) ع	اِنَّ	الَّذِيْنَ	تَوَفّٰىهُمُ	الْمَلٰٓئِكَةُ	ع 13 5 10
अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला	निहायत रहम करने वाला	बेशक	वो जो	फ़ौत करते हैं उन्हें	फ़रिश्ते	

ظَالِمِىْٓ	اَنْفُسِهِمْ	قَالُوْا	فِيْمَ	كُنْتُمْ ط	قَالُوْا	كُنَّا
(जबकि वो) ज़ुल्म करने वाले हैं	अपनी जानों पर	वो कहते हैं	किस (हाल) में	थे तुम	वो कहते हैं	थे हम

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مُسْتَضْعَفِيْنَ	فِى الْاَرْضِ ؕ	قَالُوْٓا	اَلَمْ	تَكُنْ	اَرْضُ	اللّٰهِ	وَاسِعَةً
कमज़ोर	ज़मीन में	वो कहते हैं	क्या नहीं	थी	ज़मीन	अल्लाह की	वसीअ

فَتُهَاجِرُوْا	فِيْهَا ؕ	فَاُولٰٓئِكَ	مَاْوٰىهُمْ	جَهَنَّمُ ؕ	وَسَآءَتْ
पस तुम हिजरत कर जाते	उसमें	तो यही लोग हैं	ठिकाना उनका	जहन्नम है	और कितना बुरा है

مَصِيْرًا ﴿97﴾ ۙ	اِلَّا	الْمُسْتَضْعَفِيْنَ	مِنَ الرِّجَالِ	وَالنِّسَآءِ	وَالْوِلْدَانِ
ठिकाना	सिवाए (उनके)	जो कमज़ोर हैं	मर्दों में से	और औरतों में से	और बच्चों में से

لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ	حِيْلَةً	وَّلَا	يَهْتَدُوْنَ	سَبِيْلًا ﴿98﴾ ۙ	فَاُولٰٓئِكَ	عَسَى
नहीं वो इस्तिताअत रखते	किसी हीले/तदबीर की	और नहीं	वो पाते	कोई रास्ता	पस यही लोग	उम्मीद है

اللّٰهُ	اَنْ	يَّعْفُوَ	عَنْهُمْ ؕ	وَكَانَ	اللّٰهُ	عَفُوًّا	غَفُوْرًا ﴿99﴾
अल्लाह	कि	दरगुज़र करे	उनसे	और है	अल्लाह	बहुत माफ़ करने वाला	बहुत बख़्शने वाला

وَمَنْ	يُّهَاجِرْ	فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	يَجِدْ	فِى الْاَرْضِ	مُرٰغَمًا
और जो कोई	हिजरत करेगा	अल्लाह के रास्ते में	वो पाएगा	ज़मीन में	जाए पनाह

كَثِيْرًا	وَّسَعَةً ؕ	وَمَنْ	يَّخْرُجْ	مِنْ بَيْتِهٖ	مُهَاجِرًا	اِلَى اللّٰهِ
बहुत सी	और वुसअत	और जो कोई	निकलेगा	अपने घर से	हिजरत करते हुए	तरफ़ अल्लाह के

وَرَسُوْلِهٖ	ثُمَّ	يُدْرِكْهُ	الْمَوْتُ	فَقَدْ	وَقَعَ	اَجْرُهٗ	عَلَى اللّٰهِ ؕ
और उसके रसूल के	फिर	पा ले उसे	मौत	तो तहक़ीक़	वाक़ेअ हो गया	अज्र उसका	अल्लाह पर

وَكَانَ	اللّٰهُ	غَفُوْرًا	رَّحِيْمًا ﴿100﴾ ع	وَاِذَا	ضَرَبْتُمْ	فِى الْاَرْضِ
और है	अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला	निहायत रहम करने वाला	और जब	सफ़र करो तुम	ज़मीन में

ع 14 4 11

فَلَيْسَ	عَلَيْكُمْ	جُنَاحٌ	اَنْ	تَقْصُرُوْا	مِنَ الصَّلٰوةِ ۖ	اِنْ	خِفْتُمْ
तो नहीं है	तुम पर	कोई गुनाह	कि	तुम क़सर कर लो	नमाज़ में से	अगर	ख़ौफ़ हो तुम्हें

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

أَنْ	يَّفْتِنَكُمُ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا ط	إِنَّ	الْكٰفِرِيْنَ	كَانُوْا	لَكُمْ
कि	फ़ितने में डालेंगे तुम्हें	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	बेशक	काफ़िर	हैं	तुम्हारे लिए

عَدُوًّا	مُّبِيْنًا (101)	وَإِذَا	كُنْتَ	فِيْهِمْ	فَأَقَمْتَ	لَهُمُ	الصَّلٰوةَ
दुश्मन	खुल्लम-खुल्ला	और जब	हों आप	उनमें	तो क़ायम करें आप	उनके लिए	नमाज़

فَلْتَقُمْ	طَآئِفَةٌ	مِّنْهُمْ	مَّعَكَ	وَلْيَأْخُذُوْٓا	أَسْلِحَتَهُمْ قف
तो चाहिए कि खड़ी हो	एक जमाअत	उनमें से	आपके साथ	और चाहिए कि वो पकड़े रहें	अस्लिहा अपना

فَإِذَا	سَجَدُوْا	فَلْيَكُوْنُوْا	مِنْ وَّرَآئِكُمْ ص	وَلْتَأْتِ	طَآئِفَةٌ	أُخْرٰى
फिर जब	वो सज्दा करें	पस चाहिए कि वो हों	तुम्हारे पीछे	और चाहिए कि आए	जमाअत	दूसरी

لَمْ	يُصَلُّوْا	فَلْيُصَلُّوْا	مَعَكَ	وَلْيَأْخُذُوْا	حِذْرَهُمْ
नहीं	उन्होंने नमाज़ पढ़ी	पस चाहिए कि वो नमाज़ पढ़ें	आपके साथ	और चाहिए कि वो पकड़े रहें	बचाव अपना

وَأَسْلِحَتَهُمْ ج	وَدَّ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	لَوْ	تَغْفُلُوْنَ
और अस्लिहा अपना	चाहते हैं	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	काश	तुम ग़ाफ़िल हो जाओ

عَنْ أَسْلِحَتِكُمْ	وَأَمْتِعَتِكُمْ	فَيَمِيْلُوْنَ	عَلَيْكُمْ	مَّيْلَةً
अपने अस्लिहा से	और अपने साज़ो सामान से	तो वो हमला कर दें	तुम पर	हमला करना

وَّاحِدَةً ط	وَلَا	جُنَاحَ	عَلَيْكُمْ	إِنْ	كَانَ	بِكُمْ	أَذًى
एक ही बार	और नहीं	कोई गुनाह	तुम पर	अगर	है	तुम्हें	कोई तकलीफ़

مِّنْ مَّطَرٍ	أَوْ	كُنْتُمْ	مَّرْضٰٓى	أَنْ	تَضَعُوْٓا	أَسْلِحَتَكُمْ ج	وَخُذُوْا
बारिश से	या	हो तुम	बीमार	कि	तुम रख दो	अस्लिहा अपना	और पकड़े रहो

حِذْرَكُمْ ط	إِنَّ	اللّٰهَ	أَعَدَّ	لِلْكٰفِرِيْنَ	عَذَابًا	مُّهِيْنًا (102)	فَإِذَا
बचाव अपना	बेशक	अल्लाह ने	तैयार कर रखा है	काफ़िरों के लिए	अज़ाब	रुस्वाकुन	फिर जब

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ ج	وَّقُعُوْدًا	قِيٰمًا	اللّٰهَ	فَاذْكُرُوا	الصَّلٰوةَ	قَضَيْتُمُ
और अपने पहलुओं पर	और बैठे	खड़े	अल्लाह को	तो याद करो	नमाज़ को	पूरा कर चुको तुम

كَانَتْ	الصَّلٰوةَ	اِنَّ	الصَّلٰوةَ ج	فَاَقِيْمُوا	اطْمَاْنَنْتُمْ	فَاِذَا
है	नमाज़	बेशक	नमाज़	तो क़ायम करो	इत्मिनान में आ जाओ तुम	फिर जब

فِي ابْتِغَآءِ	تَهِنُوْا	وَلَا	مَّوْقُوْتًا (103)	كِتٰبًا	عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ
तलाश में	तुम कमज़ोरी दिखाओ	और ना	मुक़र्रर औक़ात में	फ़र्ज़	मोमिनों पर

كَمَا	يَاْلَمُوْنَ	فَاِنَّهُمْ	تَاْلَمُوْنَ	تَكُوْنُوْا	اِنْ	الْقَوْمِ ط
जैसा कि	वो तकलीफ़ उठाते हैं	तो बेशक वो (भी)	तकलीफ़ उठाते	हो तुम	अगर	(दुश्मन) क़ौम की

اللّٰهُ	وَكَانَ	لَا يَرْجُوْنَ ط	مَا	مِنَ اللّٰهِ	وَتَرْجُوْنَ	تَاْلَمُوْنَ ج
अल्लाह	और है	नहीं वो उम्मीद रखते	उसकी जो	अल्लाह से	और तुम उम्मीद रखते हो	तुम तकलीफ़ उठाते हो

بِالْحَقِّ	الْكِتٰبَ	اِلَيْكَ	اَنْزَلْنَآ	اِنَّآ	حَكِيْمًا (104) ع	عَلِيْمًا
साथ हक़ के	किताब	तरफ़ आपके	नाज़िल की हमने	बेशक हम	बहुत हिक्मत वाला	बहुत इल्म वाला

15 ع 4 12

تَكُنْ	وَلَا	اللّٰهُ ط	اَرٰىكَ	بِمَآ	النَّاسِ	بَيْنَ	لِتَحْكُمَ
आप हों	और ना	अल्लाह ने	दिखाया आपको	साथ उसके जो	लोगों के	दर्मियान	ताकि आप फ़ैसला करें

كَانَ	اللّٰهَ	اِنَّ	اللّٰهَ ط	وَّاسْتَغْفِرِ	خَصِيْمًا (105) لا	لِّلْخَآئِنِيْنَ
है	अल्लाह	बेशक	अल्लाह से	और बख़्शिश मांगिए	झगड़ा करने वाले	ख़्यानत करने वालों के लिए

اَنْفُسَهُمْ ط	يَخْتَانُوْنَ	عَنِ الَّذِيْنَ	تُجَادِلْ	وَلَا	رَّحِيْمًا (106) ج	غَفُوْرًا
अपने नफ़्सों से	ख़्यानत करते हैं	उनकी तरफ़ से जो	आप झगड़ा करें	और ना	निहायत रहम करने वाला	बहुत बख़्शने वाला

يَّسْتَخْفُوْنَ	اَثِيْمًا (107) ج	خَوَّانًا	كَانَ	مَنْ	لَا يُحِبُّ	اللّٰهَ	اِنَّ
वो छुप सकते हैं	बहुत गुनाहगार	बहुत ख़ाइन	हो	उसको जो	नहीं पसंद करता	अल्लाह	बेशक

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِنَ النَّاسِ	وَلَا	يَسْتَخْفُوْنَ	مِنَ اللّٰهِ	وَهُوَ	مَعَهُمْ	اِذْ
लोगों से	और नहीं	वो छुप सकते	अल्लाह से	और वो	उनके साथ है	जब

يُبَيِّتُوْنَ	مَا	لَا يَرْضٰى	مِنَ الْقَوْلِ ؕ	وَكَانَ	اللّٰهُ	بِمَا
वो रातों को मशवरे करते हैं	जो	नहीं वो पसंद करता	बात में से	और है	अल्लाह	उसको जो

يَعْمَلُوْنَ	مُحِيْطًا ﴿108﴾	هٰۤاَنْتُمْ	هٰۤؤُلَاۤءِ	جٰدَلْتُمْ	عَنْهُمْ
वो अमल करते हैं	घेरने वाला	ख़बरदार तुम	वो लोग हो	झगड़ा किया तुमने	उनकी तरफ़ से

فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا قف	فَمَنْ	يُّجَادِلُ	اللّٰهَ	عَنْهُمْ	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ
दुनिया की ज़िंदगी में	तो कौन	झगड़ा करेगा	अल्लाह से	उनके बारे में	दिन	क़यामत के

اَمْ	مَّنْ	يَّكُوْنُ	عَلَيْهِمْ	وَكِيْلًا ﴿109﴾	وَمَنْ	يَّعْمَلْ	سُوْۤءًا	اَوْ
या	कौन	होगा	उन पर	कारसाज़	और जो कोई	अमल करे	बुरा	या

يَظْلِمْ	نَفْسَهٗ	ثُمَّ	يَسْتَغْفِرِ	اللّٰهَ	يَجِدِ	اللّٰهَ	غَفُوْرًا	رَّحِيْمًا ﴿110﴾
वो ज़ुल्म करे	अपनी जान पर	फिर	बख़्शिश मांगे	अल्लाह से	वो पाएगा	अल्लाह को	बहुत बख़्शने वाला	निहायत रहम करने वाला

وَمَنْ	يَّكْسِبْ	اِثْمًا	فَاِنَّمَا	يَكْسِبُهٗ	عَلٰى نَفْسِهٖ ؕ	وَكَانَ
और जो कोई	कमाए	कोई गुनाह	तो बेशक	वो कमाता है उसे	अपने ख़िलाफ़	और है

اللّٰهُ	عَلِيْمًا	حَكِيْمًا ﴿111﴾	وَمَنْ	يَّكْسِبْ	خَطِيْۤئَةً	اَوْ	اِثْمًا
अल्लाह	बहुत इल्म वाला	बहुत हिक्मत वाला	और जो कोई	कमाए	कोई ख़ता	या	कोई गुनाह

ثُمَّ	يَرْمِ	بِهٖ	بَرِيْۤئًا	فَقَدِ	احْتَمَلَ	بُهْتَانًا	وَّاِثْمًا
फिर	वो इल्ज़ाम लगाए	साथ उसके	किसी बेगुनाह पर	पस तहक़ीक़	उसने उठाया	बोहतान	और गुनाह

16 ع 8 13

مُّبِيْنًا ﴿112﴾ ع	وَلَوْلَا	فَضْلُ	اللّٰهِ	عَلَيْكَ	وَرَحْمَتُهٗ	لَهَمَّتْ
खुल्लम-खुल्ला	और अगर ना होता	फ़ज़्ल	अल्लाह का	आप पर	और रहमत उसकी	अलबत्ता इरादा कर लिया था

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

طَّآئِفَةٌ	مِّنْهُمْ	اَنْ	يُّضِلُّوْكَ ؕ	وَمَا	يُضِلُّوْنَ	اِلَّآ	اَنْفُسَهُمْ	وَمَا
एक गिरोह ने	उनमें से	कि	वो बहका दें आपको	और नहीं	वो बहकाते	मगर	अपने आपको	और नहीं

يَضُرُّوْنَكَ	مِنْ شَيْءٍ ؕ	وَاَنْزَلَ	اللّٰهُ	عَلَيْكَ	الْكِتٰبَ	وَالْحِكْمَةَ
वो नुक़्सान दे सकते आपको	कुछ भी	और नाज़िल की	अल्लाह ने	आप पर	किताब	और हिक्मत

وَعَلَّمَكَ	مَا	لَمْ	تَكُنْ	تَعْلَمُ ؕ	وَكَانَ	فَضْلُ	اللّٰهِ	عَلَيْكَ
और सिखाया आपको	वो जो	ना	थे आप	आप जानते	और है	फ़ज़्ल	अल्लाह का	आप पर

الثلثة

عَظِيْمًا ﴿113﴾	لَا خَيْرَ	فِيْ كَثِيْرٍ	مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ	اِلَّا	مَنْ	اَمَرَ
बहुत बड़ा	नहीं कोई भलाई	बहुत सी	उनकी सरगोशियों में	सिवाए	उसके जो	हुक्म दे

بِصَدَقَةٍ	اَوْ	مَعْرُوْفٍ	اَوْ	اِصْلَاحٍۭ	بَيْنَ	النَّاسِ ؕ	وَمَنْ	يَّفْعَلْ
सदक़े का	या	नेकी का	या	इस्लाह का	दर्मियान	लोगों के	और जो कोई	करेगा

ذٰلِكَ	ابْتِغَآءَ	مَرْضَاتِ	اللّٰهِ	فَسَوْفَ	نُؤْتِيْهِ	اَجْرًا	عَظِيْمًا ﴿114﴾
ये	चाहने को	रज़ा/रज़ामंदी	अल्लाह की	तो अनक़रीब	हम देंगे उसे	अज्र	बहुत बड़ा

وَمَنْ	يُّشَاقِقِ	الرَّسُوْلَ	مِنْۢ بَعْدِ	مَا	تَبَيَّنَ	لَهُ	الْهُدٰى
और जो कोई	मुख़ालिफ़त करे	रसूल की	बाद उसके	जो	वाज़ेह हो गई	उसके लिए	हिदायत

وَيَتَّبِعْ	غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ	نُوَلِّهٖ	مَا	تَوَلّٰى	وَنُصْلِهٖ
और वो पैरवी करे	मोमिनों के रास्ते के इलावा की	हम फेर देंगे उसे	जिधर	वो फिर गया	और हम जलाऐंगे उसे

جَهَنَّمَ ؕ	وَسَآءَتْ	مَصِيْرًا ﴿115﴾ ع	اِنَّ	اللّٰهَ	لَا يَغْفِرُ	اَنْ	يُّشْرَكَ
जहन्नम में	और कितनी बुरी है	लौटने की जगह	बेशक	अल्लाह	नहीं बख़्शेगा	कि	शिर्क किया जाए

ع 17 3 14

بِهٖ	وَيَغْفِرُ	مَا	دُوْنَ	ذٰلِكَ	لِمَنْ	يَّشَآءُ ؕ	وَمَنْ	يُّشْرِكْ
साथ उसके	और वो बख़्श देगा	जो	इलावा हो	इसके	जिसके लिए	वो चाहेगा	और जो कोई	शिर्क करेगा

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِاللّٰهِ	فَقَدْ	ضَلَّ	ضَلٰلًا	بَعِيْدًا (116)	اِنْ	يَّدْعُوْنَ	مِنْ دُوْنِهٖٓ
साथ अल्लाह के	तो तहक़ीक़	वो भटक गया	भटकना	बहुत दूर का	नहीं	वो पुकारते	उसके सिवा

اِلَّآ	اِنٰثًا ج	وَاِنْ	يَّدْعُوْنَ	اِلَّا	شَيْطٰنًا	مَّرِيْدًا (117) لا	لَّعَنَهُ
मगर	औरतों/देवियों को	और नहीं	वो पुकारते	मगर	शैतान	सरकश को	लानत की उस पर

اللّٰهُ	وَقَالَ	لَاَتَّخِذَنَّ	مِنْ عِبَادِكَ	نَصِيْبًا	مَّفْرُوْضًا (118) لا
अल्लाह ने	और कहा उसने	अलबत्ता मैं ज़रूर लेकर रहूंगा	तेरे बंदों में से	एक हिस्सा	मुक़र्रर

وقف لازم

وَّلَاُضِلَّنَّهُمْ	وَلَاُمَنِّيَنَّهُمْ	وَلَاٰمُرَنَّهُمْ	فَلَيُبَتِّكُنَّ
अलबत्ता मैं ज़रूर भटकाऊंगा उन्हें	और अलबत्ता मैं ज़रूर उम्मीदें दिलाऊंगा उन्हें	और अलबत्ता मैं ज़रूर हुक्म दूंगा उन्हें	फिर अलबत्ता वो ज़रूर काटेंगे

اٰذَانَ	الْاَنْعَامِ	وَلَاٰمُرَنَّهُمْ	فَلَيُغَيِّرُنَّ	خَلْقَ	اللّٰهِ ط	وَمَنْ
कान	मवेशियों के	और अलबत्ता मैं ज़रूर हुक्म दूंगा उन्हें	पस अलबत्ता वो ज़रूर बदल देंगे	तख़लीक़	अल्लाह की	और जो कोई

يَّتَّخِذِ	الشَّيْطٰنَ	وَلِيًّا	مِّنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	فَقَدْ	خَسِرَ	خُسْرَانًا
बनाएगा	शैतान को	दोस्त	सिवाए	अल्लाह के	तो तहक़ीक़	उसने नुक़्सान उठाया	नुक़्सान उठाना

مُّبِيْنًا (119) ط	يَعِدُهُمْ	وَيُمَنِّيْهِمْ ط	وَمَا	يَعِدُهُمُ	الشَّيْطٰنُ	اِلَّا
खुल्लम-खुल्ला	वो वादा करता है उनसे	और उम्मीदें दिलाता है उन्हें	और नहीं	वादा करता उनसे	शैतान	मगर

غُرُوْرًا (120)	اُولٰٓئِكَ	مَاْوٰىهُمْ	جَهَنَّمُ ز	وَلَا	يَجِدُوْنَ	عَنْهَا	مَحِيْصًا (121)
धोखे का	यही लोग हैं	ठिकाना उनका	जहन्नम है	और नहीं	वो पाएंगे	उससे	कोई जाए पनाह

وَالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ	سَنُدْخِلُهُمْ	جَنّٰتٍ	تَجْرِيْ
और वो जो	ईमान लाए	और अमल किए	नेक	अनक़रीब हम दाख़िल करेंगे उन्हें	बाग़ात में	बहती हैं

مِنْ تَحْتِهَا	الْاَنْهٰرُ	خٰلِدِيْنَ	فِيْهَآ	اَبَدًا ط	وَعْدَ	اللّٰهِ	حَقًّا ط
उनके नीचे से	नहरें	हमेशा रहने वाले हैं	उनमें	अबद तक/हमेशा-हमेशा	वादा है	अल्लाह का	सच्चा

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَمَانِيِّ	وَلَآ	بِاَمَانِيِّكُمْ	لَيْسَ	قِيْلًا (122)	مِنَ اللّٰهِ	اَصْدَقُ	وَمَنْ
आरज़ुओं पर	और ना	तुम्हारी आरज़ुओं पर	नहीं है	बात में	अल्लाह से	ज़्यादा सच्चा है	और कौन

يَجِدْ	وَلَا	بِهٖ ۙ	يُّجْزَ	سُوْٓءًا	يَّعْمَلْ	مَنْ	اَهْلِ الْكِتٰبِ ؕ
वो पाएगा	और ना	उसका	वो बदला दिया जाएगा	बुरा	अमल करेगा	जो कोई	अहले किताब की

يَّعْمَلْ	وَمَنْ	نَصِيْرًا (123)	وَّلَا	وَلِيًّا	اللّٰهِ	مِنْ دُوْنِ	لَهٗ
अमल करे	और जो कोई	कोई मददगार	और ना	कोई दोस्त	अल्लाह के	सिवाय	अपने लिए

يَدْخُلُوْنَ	فَاُولٰٓئِكَ	مُؤْمِنٌ	وَهُوَ	اُنْثٰى	اَوْ	مِنْ ذَكَرٍ	مِنَ الصّٰلِحٰتِ
दाख़िल होंगे	तो यही लोग	मोमिन हो	जबकि वो	औरत	या	मर्द हो	नेक

مِّمَّنْ	دِيْنًا	اَحْسَنُ	وَمَنْ	نَقِيْرًا (124)	يُظْلَمُوْنَ	وَلَا	الْجَنَّةَ
उससे जो	दीन में	ज़्यादा अच्छा है	और कौन	खजूर की गुठली में सुराख़ बराबर	वो ज़ुल्म किये जाऐंगे	और ना	जन्नत में

حَنِيْفًا ؕ	اِبْرٰهِيْمَ	مِلَّةَ	وَّاتَّبَعَ	مُحْسِنٌ	وَهُوَ	لِلّٰهِ	وَجْهَهٗ	اَسْلَمَ
जो यकसू था	इब्राहीम की	मिल्लते	और वो पैरवी करे	नेकोकार हो	और वो	अल्लाह के लिए	चेहरा अपना	सुपुर्द कर दे

وَمَا	فِي السَّمٰوٰتِ	مَا	وَلِلّٰهِ	خَلِيْلًا (125)	اِبْرٰهِيْمَ	اللّٰهُ	وَاتَّخَذَ
और जो कुछ	आसमानों में है	जो कुछ	और अल्लाह ही के लिए है	ख़ास दोस्त	इब्राहीम को	अल्लाह ने	और बना लिया

وَيَسْتَفْتُوْنَكَ	مُّحِيْطًا (126) ع	شَيْءٍ	بِكُلِّ	اللّٰهُ	وَكَانَ	فِي الْاَرْضِ ؕ
और वो फ़तवा मांगते हैं आपसे	घेरने वाला	चीज़ को	हर	अल्लाह	और है	ज़मीन में है

ع 18 11 15

يُتْلٰى	وَمَا	فِيْهِنَّ ۙ	يُفْتِيْكُمْ	اللّٰهُ	قُلِ	فِي النِّسَآءِ ؕ
पढ़ा जाता है	और जो	उनके मामले में	फ़तवा देता है तुम्हें	अल्लाह	कह दीजिए	औरतों के बारे में

مَا	لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ	الّٰتِيْ	فِيْ يَتٰمَى النِّسَآءِ	فِي الْكِتٰبِ	عَلَيْكُمْ
जो	नहीं तुम देते उन्हें	वो जो	यतीम लड़कियों के बारे में	किताब में	तुम पर

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

كُتِبَ	لَهُنَّ	وَتَرْغَبُوْنَ	اَنْ	تَنْكِحُوْهُنَّ	وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ
लिखा गया	उनके लिए	और तुम रग़बत रखते हो	कि	तुम निकाह कर लो उनसे	और कमज़ोरों (के बारे में)

مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ	وَاَنْ	تَقُوْمُوْا	لِلْيَتٰمٰى	بِالْقِسْطِ ؕ	وَمَا	تَفْعَلُوْا
बच्चों में से	और ये कि	तुम क़ायम रहो	यतीमों के लिए	इंसाफ़ पर	और जो भी	तुम करोगे

مِنْ خَيْرٍ	فَاِنَّ	اللّٰهَ	كَانَ	بِهٖ	عَلِيْمًا (127)	وَاِنِ	امْرَاَةٌ	خَافَتْ
नेकी में से	तो बेशक	अल्लाह	है	उसे	ख़ूब जानने वाला	और अगर	कोई औरत	डरे

مِنْۢ بَعْلِهَا	نُشُوْزًا	اَوْ	اِعْرَاضًا	فَلَا	جُنَاحَ	عَلَيْهِمَآ	اَنْ
अपने शौहर से	ज़्यादती करने से	या	बेरुख़ी से	तो नहीं	कोई गुनाह	उन दोनों पर	कि

يُّصْلِحَا	بَيْنَهُمَا	صُلْحًا ؕ	وَالصُّلْحُ	خَيْرٌ ؕ	وَاُحْضِرَتِ	الْاَنْفُسُ
वो दोनों सुलह कर लें	आपस में	सुलह करना	और सुलह करना	बेहतर है	और रख दी गई	नफ़्सों में

الشُّحَّ ؕ	وَاِنْ	تُحْسِنُوْا	وَتَتَّقُوْا	فَاِنَّ	اللّٰهَ	كَانَ	بِمَا
बख़ीली	और अगर	तुम एहसान करो	और तुम तक़्वा करो	तो बेशक	अल्लाह	है	साथ उसके जो

تَعْمَلُوْنَ	خَبِيْرًا (128)	وَلَنْ	تَسْتَطِيْعُوْٓا	اَنْ	تَعْدِلُوْا	بَيْنَ	النِّسَآءِ
तुम अमल करते हो	ख़ूब ख़बर रखने वाला	और हरगिज़ नहीं	तुम इस्तिताअत रख सकते	कि	तुम अदल करो	दर्मियान	बीवियों के

وَلَوْ	حَرَصْتُمْ	فَلَا	تَمِيْلُوْا	كُلَّ	الْمَيْلِ	فَتَذَرُوْهَا	كَالْمُعَلَّقَةِ ؕ
और अगरचे	तुम हिर्स करो	तो ना	तुम माइल हो जाओ	मुकम्मल	माइल हो जाना	कि तुम छोड़ दो	मानिंद लटकती हुई (शै) के

وَاِنْ	تُصْلِحُوْا	وَتَتَّقُوْا	فَاِنَّ	اللّٰهَ	كَانَ	غَفُوْرًا	رَّحِيْمًا (129)
और अगर	तुम इस्लाह/ सुलह करो	और तुम तक़्वा करो	तो बेशक	अल्लाह	है	बहुत बख़्शने वाला	निहायत रहम करने वाला

وَاِنْ	يَّتَفَرَّقَا	يُغْنِ	اللّٰهُ	كُلًّا	مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ	وَكَانَ	اللّٰهُ	وَاسِعًا
और अगर	वो दोनों अलग हो जाएं	ग़नी कर देगा	अल्लाह	हर एक को	अपनी वुसअत से	और है	अल्लाह	वुसअत वाला

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

حَكِيْمًا (130)	وَلِلّٰهِ	مَا	فِي السَّمٰوٰتِ	وَمَا	فِي الْاَرْضِ ؕ	وَلَقَدْ
बहुत हिक्मत वाला	और अल्लाह ही के लिए है	जो कुछ	आसमानों में है	और जो कुछ	ज़मीन में है	और अल्बत्ता तहक़ीक़

وَصَّيْنَا	الَّذِيْنَ	اُوْتُوا	الْكِتٰبَ	مِنْ قَبْلِكُمْ	وَاِيَّاكُمْ	اَنِ
ताकीद की हमने	उन्हें जो	दिए गए	किताब	तुमसे पहले	और तुम्हें भी	कि

اتَّقُوا	اللّٰهَ ؕ	وَاِنْ	تَكْفُرُوْا	فَاِنَّ	لِلّٰهِ	مَا	فِي السَّمٰوٰتِ	وَمَا
डरो	अल्लाह से	और अगर	तुम कुफ़्र करोगे	तो बेशक	अल्लाह ही के लिए है	जो कुछ	आसमानों में है	और जो कुछ

فِي الْاَرْضِ ؕ	وَكَانَ	اللّٰهُ	غَنِيًّا	حَمِيْدًا (131)	وَلِلّٰهِ	مَا
ज़मीन में है	और है	अल्लाह	बहुत बेनियाज़	बहुत तारीफ़ वाला	और अल्लाह ही के लिए है	जो कुछ

فِي السَّمٰوٰتِ	وَمَا	فِي الْاَرْضِ ؕ	وَكَفٰى	بِاللّٰهِ	وَكِيْلًا (132)	اِنْ	يَّشَاْ
आसमानों में है	और जो कुछ	ज़मीन में है	और काफ़ी है	अल्लाह	कारसाज़	अगर	वो चाहे

يُذْهِبْكُمْ	اَيُّهَا	النَّاسُ	وَيَاْتِ	بِاٰخَرِيْنَ ؕ	وَكَانَ	اللّٰهُ	عَلٰى
वो ले जाए तुम्हें	ऐ	लोगो	और वो ले आए	दूसरों को	और है	अल्लाह	ऊपर

ذٰلِكَ	قَدِيْرًا (133)	مَنْ	كَانَ	يُرِيْدُ	ثَوَابَ	الدُّنْيَا	فَعِنْدَ	اللّٰهِ
इसके	बहुत क़ुदरत रखने वाला	जो कोई	है	चाहता	सवाब	दुनिया का	तो पास है	अल्लाह के

ثَوَابُ	الدُّنْيَا	وَالْاٰخِرَةِ ؕ	وَكَانَ	اللّٰهُ	سَمِيْعًا	بَصِيْرًا (134) ع
सवाब	दुनिया का	और आख़िरत का	और है	अल्लाह	बहुत सुनने वाला	बहुत देखने वाला

19 ع 8 16

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	كُوْنُوْا	قَوّٰمِيْنَ	بِالْقِسْطِ	شُهَدَآءَ	لِلّٰهِ
ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	हो जाओ	क़ायम रहने वाले	इंसाफ़ पर	गवाही देने वाले	अल्लाह के लिए

وَلَوْ	عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ	اَوِ الْوَالِدَيْنِ	وَالْاَقْرَبِيْنَ ج	اِنْ	يَّكُنْ	غَنِيًّا
और अगरचे	ख़िलाफ़ हो तुम्हारे अपने	या वालिदैन के	और क़राबत दारों के	अगर	वो होंगे	ग़नी

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

أَنْ	الْهَوٰٓى	تَتَّبِعُوا	فَلَا	بِهِمَا قف	أَوْلٰى	فَاللّٰهُ	فَقِيرًا	أَوْ
कि	ख़्वाहिशात की	तुम पैरवी करो	तो ना	उन दोनों का	ज़्यादा ख़ैरख़्वाह है	तो अल्लाह	फ़क़ीर	या

بِمَا	كَانَ	اللّٰهَ	فَإِنَّ	تُعْرِضُوا	أَوْ	تَلْوٗٓا	وَإِنْ	تَعْدِلُوا ج
उसकी जो	है	अल्लाह	तो बेशक	तुम ऐराज़ करोगे	या	तुम मौड़ दोगे (ज़बान)	और अगर	(ना) तुम अदल करो

وَرَسُولِهٖ	بِاللّٰهِ	اٰمِنُوا	اٰمَنُوٓا	يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ	خَبِيرًا (135)	تَعْمَلُونَ
और उसके रसूल पर	अल्लाह पर	ईमान ले आओ	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो	ख़ूब ख़बर रखने वाला	तुम अमल करते हो

أَنْزَلَ	الَّذِىٓ	وَالْكِتٰبِ	عَلٰى رَسُولِهٖ	نَزَّلَ	الَّذِى	وَالْكِتٰبِ
उसने नाज़िल की	जो	और वो किताब	अपने रसूल पर	उसने नाज़िल की	जो	और इस किताब पर

وَكُتُبِهٖ	وَمَلٰٓئِكَتِهٖ	بِاللّٰهِ	يَّكْفُرْ	وَمَنْ	مِنْ قَبْلُ ط
और उसकी किताबों का	और उसके फ़रिश्तों का	अल्लाह का	कुफ़्र करे	और जो कोई	इस से पहले

إِنَّ	بَعِيدًا (136)	ضَلٰلًاۢ	ضَلَّ	فَقَدْ	وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ	وَرُسُلِهٖ
बेशक	बहुत दूर का	भटक जाना	वो भटक गया	पस तहक़ीक	और आख़िरी दिन का	और उसके रसूलों का

ثُمَّ	كَفَرُوا	ثُمَّ	اٰمَنُوا	ثُمَّ	كَفَرُوا	ثُمَّ	اٰمَنُوا	الَّذِينَ
फिर	उन्होंने कुफ़्र किया	फिर	वो ईमान लाए	फिर	उन्होंने कुफ़्र किया	फिर	ईमान लाए	वो लोग जो

لِيَهْدِيَهُمْ	وَلَا	لَهُمْ	لِيَغْفِرَ	اللّٰهُ	يَكُنِ	لَّمْ	كُفْرًا	ازْدَادُوا
ये कि हिदायत दे उन्हें	और ना	उन्हें	कि वो बख़्श दे	अल्लाह	है	नहीं	कुफ़्र में	वो बढ़ गए

أَلِيمًا (138) لا	عَذَابًا	لَهُمْ	بِأَنَّ	الْمُنٰفِقِينَ	بَشِّرِ	سَبِيلًا (137) ط
दर्दनाक	अज़ाब है	उनके लिए	कि बेशक	मुनाफ़िक़ों को	ख़ुश-ख़बरी दे दीजिए	रास्ते की

الْمُؤْمِنِينَ ط	مِنْ دُونِ	أَوْلِيَآءَ	الْكٰفِرِينَ	يَتَّخِذُونَ	الَّذِينَ
मोमिनों के	सिवाए	दोस्त	काफ़िरों को	बना लेते हैं	वो जो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَقَدْ	جَمِيْعًا ؕ (139)	لِلّٰهِ	الْعِزَّةَ	فَاِنَّ	الْعِزَّةَ	عِنْدَهُمُ	اَيَبْتَغُوْنَ
हालांकि तहक़ीक़	सारी की सारी	अल्लाह ही के लिए है	इज़्ज़त	तो बेशक	इज़्ज़त	पास उनके	क्या वो चाहते हैं

يُكْفَرُ	اٰيٰتِ اللّٰهِ	سَمِعْتُمْ	اِذَا	اَنْ	فِي الْكِتٰبِ	عَلَيْكُمْ	نَزَّلَ
कुफ़्र किया जाता है	अल्लाह की आयात को	सुनो तुम	जब	कि	किताब में	तुम पर	उसने नाज़िल किया

يَخُوْضُوْا	حَتّٰى	مَعَهُمْ	تَقْعُدُوْا	فَلَا	بِهَا	وَيُسْتَهْزَاُ	بِهَا
वो मशग़ूल हो जाएँ	यहां तक कि	साथ उनके	तुम बैठो	तो ना	उनका	और मज़ाक़ उड़ाया जाता है	उनका

جَامِعُ	اللّٰهَ	اِنَّ	مِّثْلُهُمْ ؕ	اِذًا	اِنَّكُمْ	غَيْرِهٖٓ ۖ	فِيْ حَدِيْثٍ
जमा करने वाला है	अल्लाह	बेशक	उन जैसे (होगे)	तब	(वरना) बेशक तुम	इलावा उसके	किसी बात में

يَتَرَبَّصُوْنَ	الَّذِيْنَ	جَمِيْعًا ۙ (140)	فِيْ جَهَنَّمَ	وَالْكٰفِرِيْنَ	الْمُنٰفِقِيْنَ
इंतिज़ार कर रहे हैं	वो लोग जो	सब के सब को	जहन्नम में	और काफ़िरों को	मुनाफ़िक़ों को

نَكُنْ	اَلَمْ	قَالُوْٓا	مِّنَ اللّٰهِ	فَتْحٌ	لَكُمْ	كَانَ	فَاِنْ	بِكُمْ ۚ
थे हम	क्या नहीं	वो कहते हैं	अल्लाह की तरफ़ से	कोई फ़तह	तुम्हारे लिए	हो	फिर अगर	तुम्हारे बारे में

اَلَمْ	قَالُوْٓا	نَصِيْبٌ ۙ	لِلْكٰفِرِيْنَ	كَانَ	وَاِنْ	مَّعَكُمْ ۖ
क्या नहीं	वो कहते हैं	कोई हिस्सा	काफ़िरों के लिए	हो	और अगर	साथ तुम्हारे

يَحْكُمُ	فَاللّٰهُ	مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ	وَنَمْنَعْكُمْ	عَلَيْكُمْ	نَسْتَحْوِذْ
फ़ैसला करेगा	पस अल्लाह	मोमिनों से	और हम बचा रहे थे तुम्हें	तुम पर	हम ग़ालिब आने लगे थे

عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ	لِلْكٰفِرِيْنَ	اللّٰهُ	يَّجْعَلَ	وَلَنْ	يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ	بَيْنَكُمْ
मोमिनों पर	काफ़िरों के लिए	अल्लाह	बनाएगा	और हरगिज़ नहीं	दिन क़यामत के	दर्मियान तुम्हारे

خَادِعُهُمْ ۚ	وَهُوَ	اللّٰهَ	يُخٰدِعُوْنَ	الْمُنٰفِقِيْنَ	اِنَّ	سَبِيْلًا ع (141)
धोखा देने वाला है उन्हें	हालांकि वो	अल्लाह को	वो धोखा देते हैं	मुनाफ़िक़ीन	बेशक	कोई रास्ता

ع 20 7 17

النَّاسَ	يُرَآءُوْنَ	كُسَالٰى ۙ	قَامُوْا	اِلَى الصَّلٰوةِ	قَامُوْٓا	وَاِذَا
लोगों को	वो दिखावा करते हैं	इंतिहाई सुस्ती से	वो खड़े होते हैं	तरफ़ नमाज़ के	वो खड़े होते हैं	और जब

ذٰلِكَ ۖ	بَيْنَ	مُّذَبْذَبِيْنَ	قَلِيْلًا ﴿142﴾ ۙ	اِلَّا	اللّٰهَ	يَذْكُرُوْنَ	وَلَا
इसके	दर्मियान	मुतज़बज़ब हैं	बहुत थोड़ा	मगर	अल्लाह को	वो याद करते	और नहीं

اللّٰهُ	يُّضْلِلِ	وَمَنْ	هٰٓؤُلَآءِ ۭ	اِلٰى	وَلَآ	هٰٓؤُلَآءِ	اِلٰى	لَآ
अल्लाह	भटका दे	और जिसे	उन लोगों के	तरफ़	और ना	इन लोगों के	तरफ़	ना

لَا تَتَّخِذُوا	اٰمَنُوْا	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	سَبِيْلًا ﴿143﴾	لَهٗ	تَجِدَ	فَلَنْ
ना तुम बनाओ	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो	कोई रास्ता	उसके लिए	आप पाएंगे	तो हरगिज़ नहीं

تَجْعَلُوْا	اَنْ	اَتُرِيْدُوْنَ	الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ	مِنْ دُوْنِ	اَوْلِيَآءَ	الْكٰفِرِيْنَ
तुम बनाओ	कि	क्या तुम चाहते हो	मोमिनों के	सिवाए	दोस्त	काफ़िरों को

فِي الدَّرْكِ	الْمُنٰفِقِيْنَ	اِنَّ	مُّبِيْنًا ﴿144﴾	سُلْطٰنًا	عَلَيْكُمْ	لِلّٰهِ
दर्जे में होंगे	मुनाफ़िक़ीन	बेशक	वाज़ेह	कोई दलील	अपने ख़िलाफ़	अल्लाह के लिए

اِلَّا	نَصِيْرًا ﴿145﴾ ۙ	لَهُمْ	تَجِدَ	وَلَنْ	مِنَ النَّارِ ۚ	الْاَسْفَلِ
मगर	कोई मददगार	उनके लिए	आप पाएंगे	और हरगिज़ नहीं	आग के	सबसे निचले

دِيْنَهُمْ	وَاَخْلَصُوْا	بِاللّٰهِ	وَاعْتَصَمُوْا	وَاَصْلَحُوْا	تَابُوْا	الَّذِيْنَ
अपने दीन को	और ख़ालिस कर लिया	अल्लाह को	और मज़बूती से थाम लिया	और इस्लाह कर ली	तौबा की	वो जिन्होंने

اللّٰهُ	يُؤْتِ	وَسَوْفَ	الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ	مَعَ	فَاُولٰۗىِٕكَ	لِلّٰهِ
अल्लाह	देगा	और अनक़रीब	मोमिनों के	साथ	तो यही लोग हैं	अल्लाह के लिए

بِعَذَابِكُمْ	اللّٰهُ	يَفْعَلُ	مَا	عَظِيْمًا ﴿146﴾	اَجْرًا	الْمُؤْمِنِيْنَ
तुम्हें अज़ाब देकर	अल्लाह	करेगा	क्या	बहुत बड़ा	अज्र	मोमिनों को

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَلِيْمًا ﴿147﴾	شَاكِرًا	اللّٰهُ	وَكَانَ	وَاٰمَنْتُمْ ط	شَكَرْتُمْ	اِنْ
बहुत इल्म वाला	क़दरदान	अल्लाह	और है	और ईमान ले आओ तुम	शुक्र करो तुम	अगर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION